सितम्बर, 1986
वर्ष 22 ❋ अंक 3

ज्ञानामृत

मूल्य 1.50

नई दिल्ली : राष्ट्रपति भवन में ब्र० कु० पुष्पा महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह जी को पावन राखी बांधते हुए।

ब्र०कु० चक्रधारी जी भारत के उपराष्ट्रपति, श्री वेंकटरमन को स्नेह-सूचक राखी बांधते हुए। उनके बाँयी ओर खड़ी हैं तिलक की तैयारी में ब्र०कु० सुधा जी, व रानी जी।

मूल्य १.५०

कलकत्ता : राजभवन में ब्र० कु० कानन प. बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता नूर-उल-हसन को स्नेह और पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए।

भुवनेश्वर : उड़ीसा के राज्यपाल भ्राता वी.एन. पांडे जी को राखी बांधने के पश्चात् ब्र० कु० संदेशी, ब्र० कु० कुसम तथा बिजय चित्र में उन के साथ दिखाई दे रहे हैं।

नई दिल्ली : (बाएं से) ब्र० कु० बिमला भ्राता आर. मिश्रा, न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय को राखी तथा प्रसाद देते हुए।
ब्र० कु० बिमला भ्राता एस. एम. देव, भारत के पर्यटन राज्यमन्त्री को राखी बांधने के पश्चात् तिलक देते हुए।
भ्राता जयप्रकाश जी न्यायाधीश भ्राता बालाकृष्ण इराडी को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

भारत के रसायन विभाग के राज्य मन्त्री, श्री आर. के. जयचन्द्र सिंह जी को राखी बांध रही हैं ब० कु० चक्रधारी जी।

राजस्थान के मुख्यमन्त्री भ्राता हरदेव जोशी को कोटा में ब्र० कु० सुमित्रा एवं बहन राजेन्द्र कौर राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

नई दिल्ली : में बाएं से ब्र० कु० विमला न्यायाधीश भ्राता आर.एस. सरकारिया को राखी बांधते हुए। राखी बांधने के पश्चात् ब्र० कु० इन्द्रा, श्रीमति ओज़ा, न्यायाधीश भ्राता जी.एल. ओज़ा, ब्र०कु० विमला तथा ब्र० कु० जयप्रकाश।

गुजरात राज्य के मुख्यमन्त्री भ्राता अमरसिंह चौधरी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ब्र० कु० भाई बहिनें उनके साथ खड़े हैं।

भिवानी सेन्ट्रल जेल में कैदी भाइयों को राखी पर्व के अवसर पर ब्र० कु० नारायणी ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

भुवनेश्वर : उड़ीसा के मुख्यमन्त्री भ्राता जे. बी. पटनायक को राखी बांधने के पश्चात् ब्र० कु० सन्देशी, कुसम, विजय भाई तथा सरतचन्द्र पांडे उनके साथ दिखाई दे रहे हैं।

राजस्थान विधान सभा के विपक्ष के नेता भ्राता भैरों सिंह शेखावत जी को ब्र० कु० सुषमा राखी बांधते हुए।

Regd No. 10563/65 D(E) 70

जयपुर : राजस्थान के राज्यपाल भ्राता वसंत दादा पाटिल को राखी बांधने के पश्चात् उसका महत्व समझाते हुए ब्र० कु० सुषमा जी।

कलकत्ता : प. बंगाल के मुख्यमन्त्री भ्राता ज्योति बसु को ब्र०कु० गीता आत्म स्मृति का तिलक देते हुए।

राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष भ्राता गिरीराज प्रसाद तिवारी जी को ब्र० कु० सुषमा राखी बांधते हुए।

भारत के विधि आयोग के चेयरमैन तथा सुप्रीम कोर्ट के भूतपूर्व जज, भ्राता डी.ए. देसाई राखी बंधवाने के पश्चात् पीस अपील (Peace Appeal) का प्रतिज्ञा-पत्र पढ़ते हुए।

सुप्रीम कोर्ट के जज, भ्राता बी.सी. राय को राखी बाँधने के पश्चात् आत्म स्मृति का तिलक दे रही हैं, ब्र० कु० सुधा जी।

देहली : ब्र० कु० कमलमणि डी.सी.पी. शाहदरा को राखी बांधते हुए।

अमृत-सूची

१. मानव का अहिंसा से ही कल्याण	१	९. सम्पूर्णता हमारा लक्ष्य है	१५
२. समाज को तनाव-मुक्त करने के लिये त्रि-सूत्रीय कार्यक्रम की आवश्यकता (सम्पादकीय)	२	१०. हरी भरी दुनिया	१६
३. जीवन का बलिदान करने वालो..... अब दिव्यता का आह्वान करो	४	११. जहां सुमति तहँ सम्पत्ति नाना	१७
४. क्रोध का शोध कर अब प्रेम की गंगा बहाओ	६	१२. परीबी का कारण चरित्रहीनता	१९
५. ध्वनि प्रदूषण से मुक्ति दिलाने में राजयोग का योगदान	९	१३. चिन्ता से मुक्ति	२२
६. तोड़के बंधन अन्धकार के	९	१४. भावना एवं कर्त्तव्य	२४
७. सेवा समाचार (चित्रों में)	१०	१५. स्वर्णिम युग की चाह	२५
८. सहकारत्मक ईश्वरीय सेवा	१३	१६. रूहानी प्यार का महत्त्व	२७
		१७. सचित्र समाचार	२९
		१८. आध्यात्मिक सेवा समाचार	३०

मानव का अहिंसा से ही कल्याण

इन्दौर. मानव जाति का कल्याण ईमानदारी, मानवता से प्रेम, दुखियों की सहायता तथा अहिंसा से ही किया जा सकता है। जिसमें इन सभी गुणों का समन्वय है, वही सच्चा मानव है।

ये शब्द आज प्रजापिता ब्रम्हाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ओमशान्ति भवन में ज्ञानांजलि के सौ सप्ताह पूर्ण होने पर आयोजित मानव कल्याण महोत्सव में म.प्र. लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष एम.वी. पीटर ने कहे। उन्होंने कहा कि आन्तरिक विश्वास एवं मान्यता पर आधारित धर्म का बाह्य प्रदर्शन नहीं होना चाहिए। अध्यात्मिकता में विश्वास रखते हुए मानव जाति की प्रगति के लिए कार्य करें, तो निरन्तर हम उन्नति की ओर बढ़ते जायेंगे।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि महू स्थित एम.सी.टी.ई. के कमाण्डेण्ट लेफ्टिनेंट एस.एल. मेहरोत्रा, ने कहा कि विज्ञान एवं टेक्नालॉजी ने मानव को जल, थल से पार अन्तरिक्ष में पहुंचा दिया है। पाश्चात्य संस्कृति में वह इतना डूब गया है कि आत्म उन्नति के लिए उसके पास समय नहीं है। परमाणु शक्ति के प्रयोग और प्रतिस्पर्धा के कारण मानव जाति विनाश की ओर बढ़ती जा रही है, अतः ऐसे समय पर मानव को अध्यात्म की ओर मोड़ने और उसे दिशा दर्शन देने की अति आवश्यकता है।

अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष प्रो. शमसुद्दीन जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रारम्भ से ही धर्मप्राण एवं अध्यात्मिक, आदर्शों से ओतप्रोत रहा है। प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य संसार को समृद्ध करना था, परन्तु आज का मानव भौतिक चकाचौंध में ईश्वर के अस्तित्व को ही चुनौती दे रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्रह्माकुमारी किरण बहन ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि विश्व में तर्क शक्ति, विचार-शक्ति, निर्णय शक्ति, अनुभव शक्ति आदि से सम्पन्न सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानव है। जब वह अपनी इन शक्तियों का सदुपयोग करता है, तो देवता बन जाता है और जब वह इन शक्तियों का दुरुपयोग करता है तो दानव कहलाता है। आज का मानव दुर्भावनाओं से ग्रसित होने के कारण अपनी इन शक्तियों के साथ ही विज्ञान प्रदत्त साधन एवं सुविधाओं का भी दुरुपयोग कर रहा है।

कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी विमला बहन ने किया।

ओमशान्ति भवन इन्दौर में हुए 100वें 'ज्ञानांजली' कार्यक्रम का दृश्य।

समाज को तनाव-मुक्त करने के लिए त्रिसूत्रीय कार्यक्रम की आवश्यकता !

किसी ने कहा है कि २०वीं शताब्दी तनाव की शताब्दी है। यह वाक्य यथार्थ ही मालूम होता है क्योंकि इस शताब्दी में जितना संघर्ष, जितने लड़ाई-झगड़े और जितने फ़िसाद हुए हैं उतने शायद ही पहले किसी अन्य शताब्दी में हुए होंगे। आज शायद ही कोई नगर या देश ऐसा होगा जहां आन्तरिक अथवा बाह्य तत्वों ने हलचल पैदा न कर रखी हो। प्राय: हर देश की सरकार के सामने यह समस्या प्राथमिक स्थान लिये हुए है कि देश की आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा कैसे हो? सब जगह हिंसा और उत्पात का-सा वातावरण बना हुआ है। विश्व में आज अस्त्रों-शस्त्रों और सैनाओं पर जितना खर्च होता है, उतना अन्य किसी भी एक विषय पर उतना खर्च नहीं होता।

यह सब होने पर भी संसार का ध्यान इस बात पर नहीं है कि इस सब अनबन और रगड़े-झगड़े का मूल कारण क्या है? विश्व शांति के लिए चर्चाएं होती हैं, बड़े-बड़े देशों के प्रतिनिधि बैठते हैं और भू-मंडल के एक अथवा दूसरे खंड में हुए शीत अथवा गर्म युद्ध पर विचार करते हैं। धार्मिक नेता भी शांति के लिए जप-तप, पाठ-पूजा आदि का विधान जन-जन को बताते हैं परंतु फिर भी शांति गायब होती जा रही है।

चिकित्सक लोग भी अब इस बात को अच्छी तरह मानते हैं कि चिंता, भय, जल्दबाज़ी आदि कारणों से मनुष्य आज अशांत है। इसके लिए वे दुख से व्याकुल लोगों को नींद लानेवाली गोलियां दे देते हैं परंतु वे यह भी समझते हैं कि यह इस समस्या का कोई स्थायी और आदर्श समाधान नहीं है। वे मनुष्य की इस मनोस्थिति को तनाव (Tension) की स्थिति कहते हैं। उनका कहना यह है कि तनाव से बहुत से मानसिक तथा शारीरिक रोग भी होते हैं। अत: आज मेडिकल कॉलेजों इत्यादि में तनाव के विषय में विशेष रीति से चर्चा की जाती है और डॉक्टर लोग रोगियों को तनाव-रहित अवस्था में रहने के लिए विशेषतौर पर राय देते हैं।

यह सब होने पर भी हम देखते हैं कि स्वयं डॉक्टर्स भी अपने गृहस्थ व्यवहार के मामलों में कई बार तनाव में आते हैं।

मानसिक तनाव से कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं, उस पर तो आज चिकित्सकों तथा सामान्य जनों का ध्यान गया है और वे योगाभ्यास को इसके लिए महत्त्वपूर्ण मानकर योग की तरफ थोड़ा-बहुत ध्यान भी देने लगे हैं परंतु वास्तव में मानसिक तनाव जितना खतरनाक है, उतना अभी तक इसकी ओर ध्यान नहीं गया। किसी एक व्यक्ति को मानसिक तनाव के कारण यदि हृदय रोग होता है अथवा अल्सर या हाई-ब्लॅड-प्रेशर, तो वह भी नि:संदेह कष्टदायक तो है ही परंतु एक-दो व्यक्तियों के मानसिक तनाव के कारण जो एक सारे नगर, देश, समाज अथवा देश-विदेश में उथल-पुथल, रक्तपात या लड़ाई होती है, वह व्यक्तिगत शारीरिक रोग से कहीं ज्यादा भयानक है। किसी व्यक्ति को टेंशन (Tension) होने पर डॉक्टर उसे नींद की गोलियां देकर सुला भी देता है और २-४ व्यक्ति मिलकर उस तनाव-ग्रस्त व्यक्ति को शांत भी कर देते हैं परंतु जब किन्हीं २-४ व्यक्तियों के तनाव-ग्रस्त होने से सारे शहर में उत्पात मच जाता है तो फिर सैकड़ों-हज़ारों व्यक्ति कई दिन अथवा महीने लगाने पर भी सामान्य स्थिति अथवा शांति फिर से स्थापित करने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं।

हम आये दिन समाचारपत्रों में पढ़ते हैं कि एक-दो सिरफिरे व्यक्तियों के उत्तेजक कार्य-कलापों से सारे नगर अथवा सारे देश में जातीय दंगों के रूप में आग भड़क उठी है। ऐसे तनाव की स्थिति में ऐसे लोग न पुलिस की गोलियों से डरते हैं न जेल की सज़ा से और न इसके बाद में होनेवाले परिणामों से। करोड़ों रुपयों की संपत्ति जिसे जुटाने में वर्षों लग गए होते हैं, चन्द मिनटों में भस्मीभूत हो जाती है। मनुष्य-मनुष्य का कसाई होकर अथवा जल्लाद बनकर होश खोकर हिंसा का नाच करता है और कितने ही लोगों को अपने क्रोध के लावे में अथवा गुस्से की आंधी में धराशायी कर देता है। ऐसा बुरा है तनाव जो मनुष्य को भूत अथवा दैत्य से भी अधिक विकराल बना देता है। भूत इतनी हानि करने में सक्षम नहीं होता परंतु तनाववाला व्यक्ति खूब विध्वंस का निकृष्ट कार्य करता है। बाहर अग्नि की ज्वाला जगाने से पहले यह मनुष्य के मन में ज्वाला दीप्त करता है। बाहर गोली या तलवार चलाने से पहले यह मनुष्य के संयम को उखाड़कर फेंक देता है और उसे बेकाबू करके अभी कुछ दिन पहले रूस में हुए एटॉमिक रिएक्टर के विस्फोट की तरह बनाकर उसके गुस्से की रेडियाई तरंगों (Radium Waves) को फैला देता है। इस प्रकार तनाव

केवल ब्लॅड-प्रेशर या कैंसर करनेवाली ही एक मानसिक विकृति नहीं है बल्कि यह तो स्वयं में एक संक्रामक रोग है जो कुछ ही सेकडों में देशों को अपने घेरे में ले लेता है । आज यह सर्व ज्ञात है कि जिसे कन्जकटिव-आइटिस (Conjuctivitis) का रोग हो जाता है, उसकी आंखें लाल हो जाती हैं, जलने लगती हैं और आंसू बहाने लगती हैं ।

ठीक इसी प्रकार तनाववाले व्यक्ति की भी आंखें लाल-पीली हो जाती हैं या दुख के कारण उसके मन-चक्षु में जलन महसूस होती है और वह भी क्रोध भरे शब्दों से अथवा क्रोध-युक्त आंखों द्वारा दूसरों को निहारने से दूसरों को भी प्राय: यह बीमारी लगा देता है और नगर-नगर में इस बीमारी की हवा फैल जाती है । रेडियो पर खबर आती है अथवा समाचारपत्र में यह समाचार आता है कि अमुक-अमुक तनावपूर्ण व्यक्तियों के बीच मुठभेड़ हो गई और इस बात को सुनते ही जगह-जगह तनाव की लहर फैल जाती है । इस प्रकार यह रोग संक्रामक रोग से भी अधिक तीव्र गति से फैलनेवाला, अधिक संख्या में लोगों को दबोचनेवाला और अधिक आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा पारिवारिक हानि पहुंचानेवाला है । यह मनुष्य-मात्र का महाविकराल शत्रु है ।

परंतु आश्चर्य है कि तनाव के इन परिणामों की ओर समाज का इतना ध्यान नहीं गया । लोग अनेक प्रकार की एकता स्थापित करने भ्रातृत्व भावना पैदा करने, परस्पर मेल-मिलाप से चलने के लिए बहुत से रास्ते अपनाते हैं परंतु उस सबके बावजूद भी सारा समाज इस रोग से ग्रस्त और त्रस्त है । इसका उपाय नींद की गोलियां खाना नहीं, मात्र भाषण भी नहीं, एकता के लिए लम्बे-चौड़े वक्तव्य देना भी नहीं बल्कि कुछ और ही है । वह मार्ग एक तीन-सूत्रीय कार्यक्रम है । इस कार्यक्रम का पहला सूत्र है—लक्ष्य हीन समाज को एक ऊंचे लक्ष्य से प्रेरित करके उसे उच्च विश्वास (Right Beliefs) देना । दूसरा है—उसे एक ऐसे मनोयोग, बुद्धियोग, क्रियायोग अथवा राजयोग का अभ्यास कराना जिससे कि वह शांति से सराबोर हो जाए । तीसरा है—उसे दिव्य धारणा के मार्ग पर चलाना जिससे उसके जीवन में संतोष व शीतलता का संचार हो ।

इस तीन-सूत्रीय कार्यक्रम को नि:स्वार्थ एवं योग-युक्त, शांत-चित्त एवं स्नेहशील व्यक्तियों द्वारा चलाए जाने से ही समाज का कल्याण होगा । □

जगदीश

रोपड़ में ब्र. कु. राजकुमारी जेल में कैदियों को राखी का रहस्य समझा रही हैं।

जीवन का बलिदान करने वालो·····
अब दिव्यता का आह्वान करो

ब्र० कु० सूरज कुमार, आबू

इन कोमल कलियों का बलिदान देखकर किसका मन प्रेरणा व उत्साह से नहीं भरेगा ! जो फूल अभी खिले भी नहीं हैं, जिनमें अभी सुगन्ध भरनी बाकी है, वे चले हैं इस वीरान में पुष्प उगाने, वे चले हैं इस दुर्गन्ध भरी वसुन्धरा पर पवित्रता का इत्र छिड़कने·· क्यों न गौरव होगा, उनके जन्म देने वालों को भी और क्यों न गर्व होगा उसको भी, जिसका इशारा मिलते ही इन्होंने ये बलिदानी कदम उठाया। ये कलियाँ महकते पुष्प बन जाएँ, ये कलियाँ विश्व की प्रेरक बन जाएँ, ये कलियाँ निर्बलों व निर्धनों का सहारा बन जाएँ···इनको बस ऐसी ही शुभ-भावनाओं की आवश्यकता है।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में हजारों आत्माएं अपने जीवन रूपी पुष्प को शिव पर अर्पित कर चुकी हैं। ये महान विभूतियाँ कलियुग में रहते हुए भी कलियुग से बहुत दूर निकल आई हैं और पुनः लौटने का किसी का भी कोई इरादा नहीं है। तो क्यों न इस जीवन को दिव्यता से भर दें ताकि संसार हममें ही प्रभु का दर्शन कर सके।

तो हमें अन्तर्मुखी होकर देखना है कि ये ईश्वरीय मौजों का काल कैसे बीत रहा है। कहीं ये अनमोल घड़ियों यों ही तो नहीं बीत रहीं·· कहीं ये वरदानी समय संघर्षों में ही तो नहीं बीत रहा··· कहीं ये अविनाशी कमाई की घड़ियाँ हमारे हाथ से खाली ही तो नहीं जा रहीं···ऐसा तो नहीं कि कहीं हमें एहसास भी न हो और ये सुनहरा काल यों ही बीत जाए।

मनुष्य की सबसे प्यारी वस्तु ये जीवन है, जब-कि इसे ही सेवाओं के लिए स्वाहा कर दिया, फिर भला इस जीवन को दिव्य बनाने के लिए हम एक बार दिल से मेहनत क्यों न करें। जबकि भगवान ने हमारा सभी बोझ भी हर लिया, हमें अपनी छत्र-छाया में ले लिया, अपने प्यार में समा लिया और अपना उत्तराधिकारी बना लिया तो देरी किस बात की ! तो आओ हम सभी मिलकर संकल्प करें कि जब तक अपने लक्ष्य को नहीं पा लेंगे, तपस्वी जीवन व्यतीत करेंगे, वैभवों से दूर रहेंगे और मुड़कर कभी भी पीछे नहीं देखेंगे।

जीवन का बलिदान करने वालो, जरा याद करो अपने उस अतीत को जब तुमने अपनी इस अमूल्य निधि—'जीवन' को ईश्वर को बलिदान करने का संकल्प किया था। क्या-क्या उमंगें थीं तुम्हारे दिल में ? क्या कुछ करने के साहस के साथ कदम आगे बढ़ाये थे ? जीवन के किस लक्ष्य को पाने के लिए निःसंकोच होकर और विघ्नों को लात मार कर यह कुर्बानी की थी ?

अपने साहस और आत्म विश्वासों को भूलो नहीं। तुम्हारा ये साहस तुम्हारा सहायक बनेगा। समस्याएँ और विघ्न तुम्हारे साहस व आत्म-विश्वास को समाप्त न करें। जहाँ साहस व आत्म-विश्वास है, वहाँ कठिनाई व समस्याएं स्वतः ही आत्म-समर्पण कर देती हैं।

याद करो उस समय को जब ये घड़ियाँ बीत जाएँगी·· भगवान का नूतन युग रचने का कार्य सम्पन्न हो जायेगा·· कोई विजय रत्न बन जायेंगे और कोई अष्ट रत्न·· कोई आत्मा को सर्व रसों से

भर लेंगे, किसी की तिजोरियाँ सब खजानों से भर जाएंगी तो कोई हाथ मलते ही रह जायेंगे कि ओह ···हमने भाग्य निर्माण के इस काल में क्या-क्या किया ! हम तेरे मेरे की माला में ही उलझे रहे··· हमने मान-शान के पीछे ही जीवन लगा दिया···हम न सुख दे सके, न सुख ले सके। परन्तु तब समय बीत चुका होगा और हम तब अपने को उन मनुष्यों से अच्छा नहीं समझेंगे जिन्होंने इस धरा पर आये हुए प्रभु को नहीं पहचाना।

योग-युक्त हो कर विचार करो जिस पर तुमने स्वयं को बलिदान किया है, उसने प्रत्यक्ष रूप में तुम्हें क्या दिया है ? उसने अपनी असीम शक्तियों को तुमसे जोड़ दिया है···उसने तुम्हें अपनी छत्र छाया में ले लिया है···उसने तुम्हें अपनी शीतल छाया में विश्राम दिया है, तुम्हें अपने नयनों का नूर बना लिया है,···तुम पर उसकी नज़र है।

और तुम्हें मालूम है कि वह तुमसे क्या चाहता है ? उसकी तुमसे श्रेष्ठ कामना है कि—

- ☐ ये मेरे चेतन चिराग जग को रोशन करें।
- ☐ ये मेरे नयनों के नूर जग के नूर बनें।
- ☐ मेरे ये पावन वत्स इस धरा पर उसी तरह चमकें जैसे नभ में सूर्य, चन्द्र।
- ☐ मेरी इन बलिदानी भुजाओं में तेज हो, दिव्यता हो, प्रकाश हो ताकि मेरे भक्त मेरी छवि इस धरा पर देख सकें।
- ☐ मेरे ये लाल, रूहों के सहारे बनें, मानव की डगमगाती किश्ती के किनारे बनें। मेरे ये वत्स विश्व की अमूल्य निधि बनें।
- ☐ मेरे ये वत्स जग की शोभा बनें, रोतों के लिए मुस्कान बनें, चिन्ताओं के लिए चिन्गारी बनें, अबलाओं की शक्ति बनें और अपकारियों का दिव्य विवेक बनें और इस वीरान विश्व की हरियाली लायें।
- ☐ मेरे ये वत्स अति शक्तिशाली, अडोल अचल बनें, विघ्नों को ललकारने वाले बनें और माया के साम्राज्य को समाप्त कर दें।

तो हे जग को सुगन्धित करने वाले चेतन पुष्पो, बाबा की कामनाओं को पूर्ण करो···सबके प्रेरक बन जाओ···जो लोग तुममें विश्वास नहीं करते, उन्हें भी अपने दिव्य विवेक का चमत्कार दिखाओ। जो तुम्हें रूखी दृष्टि देते हैं, उन्हें तुम सुख भरी दृष्टि के महत्व का आभास कराओ। जो तुम्हें कमजोर समझते हैं, जो तुममें संशय करते हैं, उन्हें तुम सफलता की चेतन प्रतिभा बन कर दिखाओ। तुम अपने कदम इतनी गति से आगे बढ़ाओ कि वर्षों से चलने वाले यात्री पीछे रह जाएँ और उन्हें भी तीव्र गति बनाने का उमंग प्राप्त हो।

तुम अपने जीवन को कहीं भी उलझाओ नहीं, तुम्हें तो जग की उलझनें मिटानी हैं। सेवा की उलझन से, व्यर्थ चर्चाओं की उलझन से, व्यर्थ विस्तार की उलझन से स्वयं को निकाल दो—इनके लिए तो तुमने जीवन का बलिदान नहीं किया। सोचो कि जीवन बलिदान करना कितना बहादुरी का काम है। कितना महत्व है तुम्हारा ! परन्तु दूसरे लोग यदि तुम्हारे इस बलिदान के महत्व को स्वीकार नहीं करते तो इसका कारण ? तुमने स्वयं ही, स्वयं के महत्व को, स्वयं के जीवन को, स्वयं के अनमोल क्षणों को, स्वयं के प्रत्येक श्वाँस व संकल्पों को महत्व नहीं दिया है। तुम स्वयं को महत्व दो तो जग तुम्हें महत्व देगा।

देखने वाले यदि तुममें संशय करते हैं, वे यदि तुम्हें गलत समझते हैं, तो भी तुम अपनी उमंगों को खो न दो। तुम बाबा पर विश्वास करो, जग तुम पर विश्वास करेगा। तुम तो हीरे हो, जहाँ भी होगे, वहीं चमकोगे। धूल-कण तुम्हारी चमक को कब तक लोप रखेंगे ? क्या सूर्य के प्रकाश के अस्तित्व को गड़-गड़ाते काले बादल समाप्त कर पाते हैं ? बादल हटते हैं और पुनः सूर्य का प्रकाश चारों ओर फैल जाता है। इसलिए भूल कर भी अपने स्वमान को न छोड़ो।

यदि लोग तुम्हें नहीं पहचानते, तुम्हारे दिल की सच्चाई को नहीं समझते, तुम्हारे ऊँचे इरादों का साक्षात्कार नहीं करते तो तुम इसकी भी कामना न करो। गुप्त रह कर अन्दर-ही-अन्दर दौड़ो और चुपचाप सबसे आगे निकल कर खड़े हो जाओ। तब तुम्हारी मानताओं को सब को स्वीकार करना

ही पड़ेगा। सत्य से कौन आँखें मूँद सकता है। सत्य की शक्ति स्वयं ही सत्य को प्रत्यक्ष करती है। सत्य का ढिंढोरा पीटने की भी आवश्यकता नहीं। तुम सत्य हो, तुम्हारे सत्य का सूर्य अनेकों के अन्धकार को दूर करेगा, जरा धैर्य धारण करो।

हे बलिदानी रूहों,भूल से भी तुम अपने मार्ग में काँटे न बोना। कभी न भूलना कि और कोई नहीं, आत्मा स्वयं ही अपना मित्र या शत्रु है। सदा अपना मित्र बन कर रहो तो समस्त विश्व तुम्हें मित्र प्रतीत होगा। तुम्हें तो वीरान में चमन खिलाने हैं, पुष्प महकाने हैं, तुम्हें तो कोटि-कोटि रूहों का मार्ग प्रशस्त करना है, यदि तुम्हारे पगों में निशि दिन काँटे ही चुभते रहेंगे, यदि तुम्हारे पग खुद ही रक्त सनित होंगे, तो तुम दूसरों पर अमृत कैसे छिड़कोगे।

इसलिए उठो, अपने बलिदान को सफल करो। तुम्हारे बलिदान से अनेकों को बलिदान की प्रेरणा मिले। अपने जीवन को इतना सुखद कर दो कि अनेक रूहें अपनी जंजीर तोड़ सकें। अपने मन को इतना निर्मल कर दो कि अनेकों के मन पावनता की धारा में बह चलें। अपने दिल को इतना साफ कर दो कि सबके दिल एक से जुड़ सकें। याद रखना— तुम्हारा प्रत्येक कदम, तुम्हारा प्रत्येक संकल्प, तुम्हारा प्रत्येक बोल अनेक रूहों में रूहानियत भरने वाला होगा।

जो कुछ भी तुम्हारे ,इस जीवन में आता है, उसे अपने ही बोये बीज का फल जानकर सहर्ष स्वीकार कर लो। मन को कभी भी भारी न होने दो। ये भी न सोचो कि कोई हमें पूछता नहीं। भगवान ने तुम्हें पूछा है, उसकी मीठी नजर तुम पर है, तुम अकेले हो कहाँ ? जीवन-यात्रा में उतार-चढ़ाव तो सभी के आते हैं, ऐसा देखकर अपने मनोबल को तथा अपनी उमंगों को ढीला न करो। उतरते-चढ़ते हुए अधिक शक्तिशाली व अनुभवी बनते हुए एक दिन तुम सर्वोच्च शिखर पर चढ़ ही जाओगे।

अपनी रूहानी चमक को इतना बढ़ा दो कि तुम्हारी दिव्यता को कोई अस्वीकार न कर सके। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, बस तुम वही करो जिसके लिए तुमने जीवन का बलिदान किया है। वह न करो जो तुम्हारा पथ नहीं है। तब तुम्हें संसार पूजेगा, तब तुम्हें जग स्वीकार करेगा।

कभी भी नहीं सोचो कि कोई हमें आगे बढ़ाये। योग्य बनो, अधिकारी बनो और स्वयं के बल पर आगे बढ़ो। किसी के आधार से आगे बढ़ना, किसी के सहारे पर चलना तुम्हारी शोभा नहीं। तुम्हें तो जग का आधार बनना है, तुम्हें तो जग को सहारा देना है। तुम कुछ भी माँग कर नहीं, अधिकार से ही प्राप्त करो।

तुमने ईश्वर के एक इशारे पर स्वयं को स्वाह कर दिया, अब ईश्वर तुम्हें इशारे दे रहा है। अब वह तुम्हारे इशारे पर तुम्हें सब तरह से मदद करने को तैयार है, सहस्र भुजाओं सहित। अब उसके अन्तिम इशारों को जीवन में आत्मसात् कर लो, तो शीघ्र ही समस्त विश्व तुम्हारे इशारों की इन्तजार करेगा और तुम्हारे इशारों पर कुर्बान होने के लिए तैयार रहेगा।

हे महावीर महावीरनियों···तुमने जग को ललकारा है, रूढ़ीवादिता के विरुद्ध जाने का दुस्साहस किया है, रावण को समाप्त करने का संकल्प लिया है, शेर पर तुम्हारी सवारी है, विभिन्न अस्त्र-शस्त्री से तुम सुसाज्जित हो अब अपने विवेक को विशाल करो, उसे निखार दो, विशाल दिल बन कर लोगों की हीन भावनाओं को नष्ट कर दो, तुम्हें कोई शक्ति रोक नहीं सकेगी।

इसलिए हे भगवान के वत्सो, तुमने सब कुछ जान लिया, तुमने भगवान को भी देख लिया, तुमने अपने नाते भी उनसे जोड़ लिये, भाग्य निर्माण की विधि भी तुमने जान लो, अतः सब कुछ पाने के लिए बीसों नाखूनों का जोर लगा दो। ये घड़ियाँ लौटेगी नहीं, प्रभु मिलन के ये दिन याद आया करेंगे, जीवन के ये सुखद क्षण अतीत की परछाइयों में लोप हो जायेंगे। इसलिए मन में जो भी पाने की अभिलाषा है, उसे पूर्ण कर लो। याद रखो—"मन की सच्ची इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।"

□□

क्रोध का शोध कर अब प्रेम की गंगा बहाओ

ले० ब्रह्माकुमार सत्यनारायण, कृष्णा नगर, दिल्ली

क्रोधी स्वभाव वाले मनुष्य को शान्ति नसीब नहीं होती क्योंकि क्रोधी मनुष्य दूसरों को भी अशान्त करता है और सारे वायु-मंडल को अपने उग्र स्वभाव की तरंगों से दूषित कर देता है। अतः जो मनुष्य सच्ची शान्ति का प्यासा है उसे चाहिए कि क्रोध रूपी अग्नि के निकट ही न जाए क्योंकि यही अग्नि मनुष्य के सुख को भस्म कर देती है और उसके जीवन को आफ़ाक (आकाश) से गिराकर ख़ाक (मिट्टी) में मिला देती है। जो मनुष्य क्रोध करता है, उसके बारे में यों भी लोग मुहावरे में कहते हैं कि—"वह आपे से बाहर हो गया है" और हम स्वयं देखते भी हैं कि क्रोधी मनुष्य विवेक और सन्तुलन को खो बैठता है और उसे अपनी तथा दूसरों की, पीछे की और आगे की सुध-बुध नहीं रहती। अतः अब अपनी सुध लेने वाले तथा स्वयं को सुधारना चाहने वाले मनुष्य को चाहिए कि वह आपे से बाहर न हो अर्थात् क्रोध न करे बल्कि आपे में ही मस्त रहे अर्थात् स्वरूपस्थ होकर मौज मनाए।

संसार में बिजली से पैदा होने वाली अग्नि एक ऐसी प्रकार की अग्नि है जिसे प्रज्वलित करने के लिए भी मिट्टी के तेल या दीयासलाई की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु बिजली की अग्नि मनुष्य के तन को तो जलाती है, वह उसके अन्तरात्मा या मन को नहीं जलाती। किन्तु क्रोध तो एक ऐसी अग्नि है जो कि मनुष्य के मन को भी जलाकर उसके जीवन के सार को नष्ट कर देती है। अतः जब कोई मनुष्य क्रोध करता है तो लोग कहते हैं कि—"वह मनुष्य आग-बबूला हो गया, उसके क्रोध की ज्वालामुखी फट पड़ी।" इस प्रकार स्पष्ट है कि जो मनुष्य जीवित अवस्था में स्वयं को बार-बार क्रोध की चिता पर जलाता है वह सदा अज्ञानी है। मुर्दे को जब अग्नि पर लिटाया जाता है तो उसे अग्नि का दाह अनुभव नहीं होता परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि जीवित मनुष्य क्रोध में स्वयं को जलाकर स्वयं को दुःखी करता है और फिर कहता है कि "मैंने फलां मनुष्य को सीधा कर दिया, मैंने उसका दिमाग ठिकाने लगा दिया, मैंने उसके होश ही उड़ा दिए, मैंने उसको मजा चखा दिया।" स्पष्ट है कि क्रोध द्वारा अपने दिमाग को बे-ठिकाने करने वाला, अपने स्वरूप को उल्टाने वाला और अपने मजे को गंवाने वाला मनुष्य स्वयं ही होश में नहीं होता, उसके अपने ही होश उड़ गए होते हैं। जभी तो हम कई बार देखते हैं कि मनुष्य क्रोधावेश से अपने कपड़े भी फाड़ने लगता है, बाल उखाड़ने लगता है और जबड़े फाड़-फाड़ कर बोलने लगता है। अतः क्रोध एक प्रकार का भूत है क्योंकि भूतों को मानने वाले लोग भी कहा करते हैं कि जब किसी में भूत प्रवेश होता है, तब वह भूत भी कपड़े फाड़ने लगता है, सिर को बुरी तरह पीटने लगता है अथवा अन्यान्य प्रकार से स्वयं भी दुःखित होता है और दूसरों को भी दुःखी करता है। इसलिए, परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं कि अब इस क्रोध रूपी भूत को भगा दो।

क्रोधी दूसरों को भी दुःख देता है, इसलिए दुःख पाता है

क्रोधी मनुष्य की ज़बान तलवार से भी तेज होती है। उसके वचन दूसरों को पत्थर की तरह लगते हैं। उसके शब्द अश्रु गैस से भी हज़ार गुणा बुरे होते हैं, तभी तो उससे न केवल लोग आँसू बहाते हैं बल्कि मन से रोते हैं। क्रोधी के शब्द मनुष्य के हृदय में छेद कर देते हैं और उसे दुःखी कर देते हैं अतः दुखित मनुष्य के हृदय के भीतर से निकलने

वाली आह क्रोधी को भी जला देती है, उसे भी दुःखी करती है। इसलिए क्रोधी मनुष्य जब आवेश में आकर बात करता है तो कहता भी है कि—"मेरे सीने में तो आग लगी हुई है।"

क्रोधी मनुष्य कहता है कि—"लोग मेरी बात मानते ही नहीं, इसलिए मुझे क्रोध करना पड़ता है।" उसके कहने का भाव यह हुआ कि क्रोध ही का सिक्का चलता है। परन्तु अब परमपिता परमात्मा कहते हैं कि यदि अब दूसरों पर क्रोध रूपी गोली चलाओगे, कड़वे वचन रूपी पत्थर बरसाओगे, दुःख-दायक शब्द रूपी बम मारोगे तो मरते समय तुम्हें ऐसी पीड़ा होगी जैसे किसी का सीना गोलियों से छलनी हो रहा हो, किसी के सिर पर बम मार दिया गया हो अथवा किसी के माथे पर जोर से पत्थर जा लगा हो। अतः यदि अपने जीवन को अभी सुखी बनाना चाहते हो और स्वर्ग का राज्य-भाग्य पाना चाहते हो तो क्रोध का शोध करके अब प्रेम की गंगा बहाओ।

क्रोध का दान न करने वाला ही नादान

जो व्यक्ति दूसरों को कुछ दान करता है, उसे 'दानी' कहा जाता है और जो व्यक्ति समझदार नहीं होता, उसे 'नादान' कहा जाता है। परन्तु परमपिता परमात्मा कहते हैं कि जो व्यक्ति मुझे क्रोध का दान नहीं करता वही 'ना-दान' (दान न करने वाला) है, इसलिए उसका कल्याण भी नहीं होता। जो मनुष्य चाहता है कि मेरा कल्याण हो, उसे अब परमात्मा को क्रोध का दान दे देना चाहिए।

कई लोग कहते हैं कि बाल-बच्चों को सुधारने और समझाने के लिए क्रोध करना पड़ता है। वे कहते हैं कि आज के जमाने में 'सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता।' परन्तु उन्हें समझना चाहिए कि क्रोध से तो बच्चे बिगड़ते ही हैं, सुधरते तो वे सत्संग और श्रेष्ठ विद्या ही से हैं। अतः पहले कुसंग और दूषित शिक्षा तथा रीति-नीति द्वारा बिगाड़ कर फिर उन्हें क्रोध द्वारा ठीक करने की कोशिश करना तो गोया उन्हें भी क्रोध की ट्रेनिंग देना है। वास्तव में प्रेम और स्नेह से संसार में जो कार्य होता है वह क्रोध और मार से नहीं होता क्योंकि क्रोध करने वाले से मनुष्य का मन हट जाता है और आतंक के कारण भयभीत होने से उसकी बुद्धि भी मारी जाती है। अतः दूसरों को क्रोध द्वारा सुधारना चाहने वाले मनुष्य को चाहिए कि पहले तो वह अपने मन में क्रोध का संस्कार निकालकर स्वयं को सुधारे वरना "छज तो बोले पर छलनी क्यों बोले ? (the pot calls the kettle black) वाली युक्ति उस पर घटेगी। स्वयं को सुधारा नहीं और दूसरों के आगे मियां फ़सीहत बन गए, यह तो सुधारने की कोई सफल युक्ति नहीं है।

अतः अब परमपिता परमात्मा कहते हैं—"हे वत्सो, जैसे मैं प्रेम का सागर हूं, आप भी प्रेम-स्वरूप और मधुर स्वभाव वाले बनो। आप भी सदा हर्षित रहते हुए ऐसे बोल बोलो कि दूसरे को वे फूल के समान सुगन्धित तथा रत्नों के समान अनमोल मालूम हों। आप किसी से भी क्रोध से मत बोलो क्योंकि ऐसा करने वाला मुझ सतगुरु परमात्मा का निन्दक कहलाता है और उसे स्वर्ग में ठौर नहीं मिलती। अब शान्ति को धारण करो और दूसरों को भी शान्ति देने का कर्त्तव्य करो तो उनकी शुभाशीश से आप को भी स्वर्ग में सम्पूर्ण तथा स्थायी सुख-शान्ति मिलेगी।"

□

स्वर्णिम युग की चाह (पृष्ठ २६ का शेष)

(बुद्धिमत्ता), T—Truth (सत्यता), Y—Yogi (योगी)। इस प्रकार यदि हर मनुष्य अपनी आत्मा के वास्तविक स्वरूप प्रेम-शांति व पवित्रता को समझ-कर दिव्यगुण व शक्तियों के श्रोत परमात्मा से अपना संबंध जोड़कर दिव्यता के उपरोक्त भाव को अपना ले तो निश्चित ही उसकी स्वर्णिम युग की चाह पूर्ण होगी।' □

ध्वनि प्रदूषण से मुक्ति दिलाने में राजयोग का योगदान

□ब्र.कु. मंजू, 110, सिविल लाइंस, इटावा

आप जानते हैं बहरापन एक घातक बीमारी है, नेत्रहीन होना उससे भी ज्यादा और बीमारियों से तनावग्रस्त होकर हृदयरोग से ग्रसित होना तो स्वयं को काल के मुंह में धकेलने जैसा है ।

वैज्ञानिकों का कहना है अगर शोर इसी रफ्तार से बढ़ता रहा तो सन् २००० तक १० वर्ष से अधिक आयु के लोगों को सुनने में कठिनाई आयेगी । अब इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि शोर से बहरेपन के अलावा नींद न आना, थकान, तनाव, अल्सर आदि रोग हो सकते हैं ।

मनोवैज्ञानिकों के कथनानुसार शोर या ध्वनि प्रदूषण मानसिक नियंत्रण के लिए भी घातक है । वर्तमान समय भारत के बम्बई और कलकत्ता सबसे अधिक शोर प्रदूषित शहरों में से है ।

बम्बई के डॉ. बाई टी. ओथ ने अन्य डॉक्टरों की सहायता से शोर (ध्वनि) विरोधी समिति का निर्माण किया है । उनका मत है क्रमशः बढ़ता हुआ शोर मानसिक तनाव का मूलभूत कारण है । विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार शोर स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक है ।

मानव अपने जीवन के अभ्युदय काल से लेकर जीवन संध्या तक अनेकानेक समस्याओं से ग्रसित है । उपरोक्त विवरण स्पष्ट करता है कि ध्वनि प्रदूषण की गहन समस्या है जो अपनी भयंकरता के कारण सरकार को भी इस रोग का निदान करने पर विवश कर रही है ।

सच मानिए, आपको हम एक ऐसे वातावरण से परिचित कराते हैं जो स्वयं ही Sound Proof है । जहां पर प्रदूषित वातावरण से व्याप्त तरंगें प्रभावहीन हैं ।

भारतीय मनीषियों के विषय में यह कथन सर्वथा सत्य है कि चींटियां और दीमक भी उनके शरीर पर घर बना लेती थीं परंतु उनकी तपस्या में व्यवधान उत्पन्न नहीं कर पाती थीं । प्रभु-चिंतन में लीन व्यक्ति इस दुनिया से बेखबर रहता है । फिर ये ध्वनि प्रदूषण हो या अन्य कोई समस्या उसको प्रभावित करने में सक्षम नहीं हो पातीं ।

राजयोग वह सहज उपाय है जिसके माध्यम से आप साक्षात प्रभु के दर्शन बुद्धिरूपी नेत्र से कर सकते हैं । यही नहीं बेतार के तार के माध्यम से वार्तालाप भी ।

राजयोगी जब स्वयं को परमपिता परमात्मा की याद में मगन होता है तो शरीर इस पृथ्वी पर होते हुए भी उसे बाहरी दुनिया की आवाज़ें, शोर, मारकाट, लड़ाई, झगड़ा कुछ भी तपस्या में बाधक सिद्ध नहीं होता । जब श्रवणेन्द्रियों तक शोर पहुंचता ही नहीं, सांसारिक वातावरण मस्तिष्क पर प्रभाव नहीं डालता तो हानि का प्रश्न ही नहीं ।

परमात्मा का स्नेह हमें बिल्ली के बच्चों की तरह आवे में से भी सुरक्षित निकालता है । यह एक प्रकार का ऐसा वातावरण है जिसमें सर्दी-गर्मी, बरसात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता ।

राजयोग का सिद्धांत है **'देखते हुए भी न देखो', 'सुनते हुए भी न सुनो'** अतः ध्वनि प्रदूषण से मुक्त कराने में राजयोग एक सफल औषधि है । □

तोड़ के बंधन अंधकार के!

ब्र.कु. सतीश कुमार

तोड़ के बंधन अंधकार के दिव्य प्रकाश भरें ।
शिव को याद करें ।
विश्व गगन में ज्ञान सूर्य की शुभ्र किरण बिखरायें,
बिछुड़ गये जो लाल प्रभु से आओ उन्हें मिलायें ।
प्यासे मन में परमपिता का पावन प्यार भरें ।
शिव को याद करें ।
ज्योति जगे जगमग ऐसी सब अंधकार मिट जायें,
जग उपवन में स्नेह शांति के, सुख के सुमन खिलायें ।
जड़ता में चेतनता आये वह नव-प्राण भरें ।
शिव को याद करें ।
याद की शीतल रिमझिम से तन-मन की तपन बुझेगी ।
यह भूतल उपकार के स्वर में, शिव-यशगान करेगी ।
आओ, सबको साथ में लेकर, मंगल-रास करें ।
शिव को याद करें ।
तोड़ के बंधन अंधकार के दिव्य प्रकाश भरें ।
शिव को याद करें ।।

कृष्णा नगर (देहली): ब्र.कु. उर्मिला ए.सी.पी. गांधीनगर का आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए ।

मुरादाबाद: में ब्र.कु [illegible]गा, विधान सभा सदस्य बहन पुष्पा सिंघल को राखी बांधते हुए ।

देहली: कृष्णा नगर सेवाकेंद्र की ओर से ब्र.कु. कमलमणि ए.सी.पी. शाहदरा को राखी बांधते हुए ।

कटक: के ढेंकनाल की ओर जानेवाली 'साइकिल रैली' का दृश्य ।

ढेंकनाल: में आयोजित शांति सम्मेलन का उद्‌घाटन भ्राता एफ.एन. पांडा, ए.डी.एम., डॉ. आर.पी. चौधरी, सी.डी.एम.ओ. तथा न्यायाधीश भ्राता के.बी. पांडा तथा ब्र.कु. बहनें कर रही हैं ।

माउंट आबू: पांडव भवन में हुई योग भट्ठी में समर्पित भाइयों का एक ग्रुप दादी प्रकाशमणि तथा अन्य शिक्षिकाओं के साथ।

बंगाल: के प्रसिद्ध तारकेश्वर उत्सव पर कलकत्ता सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' के उद्घाटन पश्चात् ब्र.कु. वीणा भ्राता मदनलाल एवं भ्राता श्याम सुंदर अग्रवाल जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए।

मानसा: में नव-निर्मित राजयोग भवन का उद्घाटन वहां के एस.डी.एम. जी कर रहे हैं।

बीकानेर: अणुव्रत समिति एवं जिला कांग्रेस (आई) की ओर से 'राष्ट्रीय एकता सप्ताह' के अंतर्गत सर्वधर्म सद्भावना सम्मेलन में ब्र.कु. कमल प्रवचन करते हुए।

देहली: उत्तम नगर सेवाकेंद्र की ओर से ब्र.कु. लीला भ्राता भौंरीलाल, सदस्य महानगर परिषद जी को आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए ।

पेटोड़ा: जेल में ब्र.कु. उर्मिला जेलर भ्राता गायकवाड़ को राखी बांधने के पश्चात् आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए ।

झज्जर: में ब्र.कु. राज ईश्वरीय संदेश देते हुए ।

अम्बाला कैंट: में रक्षा-बंधन के उत्सव पर आध्यात्मिक कार्यक्रम में (बाएं से) भ्राता एस.के. सेठी, डी.आई.जी. पुलिस, ब्र.कु. हरिवंश, ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. निर्मला, तथा आर.डी. घमीजा हरियाणा विधान सभा सदस्य । भंडारा में शांति

नागपुर: में प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ. प्रभाकर मांगा जी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया ।

भंडारा: में शांति प्रदर्शनी का उद्घाटन नगराध्यक्ष मा. गजवीर, लॉयन्स क्लब के अध्यक्ष भ्राता महेशकुमार कर रहे है ।

सहकारात्मक ईश्वरीय सेवा !

□ब्र.कु. रमेशशाह., बम्बई

इस ईश्वरीय जीवन के ४ मुख्य अंग हैं—ज्ञान, योग, धारणा एवं सेवा। ज्ञान और योग के आधार पर धारणायुक्त स्व का जीवन बनता है। इस प्रकार बनी हुई श्रेष्ठ जीवन के फलस्वरूप अन्य आत्माओं को भी जो हमने पाया और जो हम बने उसी समान बनाने के कार्य को सेवा कहते हैं। सेवा की क्षितिज़ (Horizon) अनहद और बेहद है। धर्मभेद, जातिभेद, वर्गभेद, वर्णभेद, रंगभेद या अर्थभेद सेवा में नहीं है। सर्व प्रकार के भेदों से निवृत्ति सेवा के क्षेत्र में है।

सेवा में उत्क्रांति हुई है। कहां वह 1937 में जशोदा भवन के एक कमरे में हुई सेवा का प्रारम्भ और कहां यह स्वर्णिम वर्ष में करीब 1600 सेवाकेंद्रों में इस ईश्वरीय ज्ञान का अभ्यास करनेवाले दो लाख आत्माएं ! बीज़ एक बहुत बड़ा वृक्ष बन गया जो कल्पवृक्ष का साक्षात्कार कराता है। सेवा अर्थ उत्सव, प्रदर्शनी, मेला, झांकी, पदयात्रा, सम्मेलन, फ़िल्म आदि—अनेक प्रकार के साधनों द्वारा हम सब आत्माओं को ईश्वरीय साधना करने का, संदेश देने का कार्य कर चुके हैं। सेवा का विस्तार बहुत हो गया क्योंकि सेवा रूपी धर्म को सबने अपनाया। 1985 वर्ष में करीब 27 करोड़ 80 लाख आत्माओं को सेवा के इन साधनों द्वारा संदेश दिया। इस तरह की **संदेशात्मक** सेवा अब तक हम आत्माओं ने बहुत अच्छी रीति से की। अब इस संदेशात्मक सेवा में जैसे सोने में सुहागा मिले जो सोने (सुवर्ण) की उपयोगिता बढ़ जाए, उसी प्रकार दो नये प्रकार की सेवा, प्यारे शिवबाबा ने हम बच्चों को सिखाई है। या तो ऐसा कहें कि गीता के 18वें अध्याय में पुर्णाहुति करने-कराने, देने-दिलाने, इस विशेष विधि के दो प्रयोग हैं।

एक प्रयोग है अनुभवात्मक सेवा। मनसा सेवा या सूक्ष्म सेवा के इस प्रयोग द्वारा अन्य आत्मा को, इस ज्ञान, योग द्वारा सर्वशक्तिवान परमात्मा के साथ अपना बुद्धि योग जोड़कर सर्वशक्तिवान की सर्वशक्ति, कर्तव्य, गुण, स्वरूप, संबंधों का अनुभव करा सकते हैं। इन अनुभवों द्वारा, वह आत्मा अपने अनेक जन्मों के हिसाब-किताब को चुकतुकर श्रेष्ठ, संपन्न, सुखी आत्मा बन सकती है। ऐसी अनुभवात्मक सेवा में वह आत्मा स्वयं अनुभव करती है इसीलिए संतुष्ट होती है और उसका भटकना बंद हो जाता है।

संदेशात्मक सेवा में अन्य व्यक्ति को संदेश देने का फर्ज़ हमारा है लेकिन संदेश देने के बाद क्या हुआ यह संभाल (Care) हम इतनी नहीं कर पाते हैं। संदेश देने के समय न धरती देखी, न जल-वर्षा का ध्यान रखा, किंतु एक किसान की तरह बीज़ डालकर आगे का कार्य उसकी तकदीर पर छोड़ दिया। संदेशात्मक सेवा जैसे अखबार, रेडियो या दूरदर्शन द्वारा विज्ञापन (Advertisement) समान है जिससे हमें संदेश मिलता है कि यह साबुन, साइकिल या यह चीज़ खरीद की जाए। सब प्रकार के विज्ञापन (Advertisement) हम पढ़ते या सुनते हैं किंतु क्या हम सभी संदेशों को स्वीकार करते हैं ? नहीं। उसी प्रकार अन्य आत्माओं को अनेक प्रकार के आध्यात्मिक संदेश मिलते हैं किंतु सब इस ईश्वरीय संदेश की गहराई में नहीं जाते। नतीज़ा यह होता है कि संदेशात्मक सेवा का परिणाम अर्थात् संदेश सुननेवाली आत्मा, उसे धारण करके प्यारे बाबा को पहिचान कर, शिवबाबा को अपने परमपिता के रूप में स्वीकार कर उन्हों की श्रीमत् पर चलने का पुरुषार्थ बहुत कम करता है।

अनुभवात्मक सेवा में वह आत्मा स्वयं के जीवन में अनुभव करती है और वह अनुभव आगे के लिए मार्गदर्शक (Guide) बनता है। एक क्षण के अनुभव में अनेक जन्मों का दर्शन—जीवन दर्शन हो जाता है। जैसे नमक या शक्कर पर अनेक प्रकार की बातें—संदेश सुनने से स्वाद का ख्याल नहीं आता। यदि वह आत्मा एक बूंद जितनी मात्रा में शक्कर या नमक का अनुभव, अपनी जिव्हा पर रखकर करता है, तो स्वाद रूपी अनुभव से जो समझ मिलती है, वह समझ संदेश द्वारा मिली हुई सूचना से अनेक गुणा ज्यादा है।

इस अनुभवात्मक सेवा के साथ दूसरी एक नवीन प्रकार के प्रयोग की ईश्वरीय सेवा प्यारे शिवबाबा ने, हम आत्माओं को सिखाई है—वह है सहयोगात्मक सेवा। अनुभवात्मक सेवा में वह आत्मा अपने जीवन में ज्ञान-योग की अनुभूति करता है। तो अब सहयोगात्मक सेवा में वह व्यक्ति एक कदम आगे आकर स्वयं इस ईश्वरीय कार्य में सहयोग देता है। परमात्मा का एक अभय-वचन है कि कोई एक कदम आगे बढ़ेगा तो परमात्मा उसके प्रति १० तो क्या १०० कदम आगे बढ़ेंगे। तो यह कदम शिवबाबा के द्वारा दर्शाये गए मार्ग पर उठाने की प्रेरणा-बल या शक्ति देना यह इस प्रकार की नवीनतम सहयोगात्मक सेवा का

लक्ष्य है । परमात्मा द्वारा बताये गये कार्य में अपनी अंगुली देने से जो बल मिलेगा, खुशी होगी वह उस आत्मा के लिये तोफा बन जायेगा और हर प्रकार के तूफान में वह एक खिवैया की तरह उसका मददगार-मार्गदर्शक बनेगा ।

सहयोगात्मक सेवा के प्रयोग अर्थ प्यारे शिवबाबा ने इस वर्ष विश्व शांति अभियान का लक्ष्य दिया है जिसको विदेश में Million Minutes Peace Programme के नाम से सबने स्वीकार किया है । शांति-विश्वशांति की मांग सब करते हैं । सब यह जानते भी हैं कि परमात्मा ही शांति स्थापक है । परंतु शांति के सागर परमात्मा से सबका योग-संबंध नहीं था । इस प्रयोग द्वारा सबके बुद्धियोग का संयोग परमात्मा से होगा और माया या अशांति से वियोग होगा । सेवा रूपी इस योग के प्रयोग से आत्मा-परमात्मा के मिलन की अनुभूति से संयोग निर्माण होगा और माया से किनारा करने का वियोग होगा और इस सेवा में कोई भी प्रकार का विनियोग अर्थात् धन के प्रयोग की जरूरत नहीं है ।

शिवबाबा द्वारा स्थापित इस रूद्रयज्ञ का सिद्धांत है कि हम धन का सहयोग अन्य आत्मा से नहीं लेते ।.धन एवं मन का बहुत आपसी संबंध है । संपत्ति के १४ प्रकार हैं उसमें एक है धन-दौलत अर्थात् पैसा । पैसे के अलावा समय रूपी पूंजी बहुत बड़ी संपत्ति है । दौलत तो कइयों के पास लाख, करोड़ या पदमों की भी होगी.परंतु समय रूपी संपत्ति तो कम है । कहते हैं हरेक को कितना समय जिंदा रहना है वे श्वास भी निश्चित हैं उसमें कम-जास्ती कोई नहीं कर सकता ।

तो अब इस सहयोगात्मक सेवा में हमें अन्य आत्माओं का समय में सहयोग लेना है और कहना है आप विश्वशांति अर्थ कितना समय देंगे ? जिस समय में आप राजयोग-प्रार्थना-मालाजाप आदि, साधना द्वारा प्रभु को याद करके प्रभु से विश्वशांति की स्थापना की दुवा मांगो । अर्थात् प्रभु द्वारा प्रेरित इस कार्यक्रम में प्रभु के साथ संबंध जोड़ने से एक प्रकार की विशेष प्राप्ति उस आत्मा को होगी । इस प्राप्ति की अनुभूति उसको और ही प्रभुप्रिय बनने में तथा प्रभु के कार्य में सहयोग देने में मदद करेगी । प्रभुप्रेम से दिये गये सहयोग का फल बहुत मीठा है । सहकार द्वारा समय को सफल करने के कारण बेकार की बातों से किनारा होगा और विश्व सरकार को शांति की स्थापना में मदद होगी । शांति रूपी स्वधर्म के प्रति प्रेम उत्पन्न होने से तथा अनुभव होने से शांति का कार्य सफल होगा । शांति की शक्ति की अनुभूति आज विश्व में किसी को नहीं है । तो इस प्रयोग द्वारा शांति की शक्ति से संबंध होगा । जीवन में एक नया मोड़ लाने का बल मिलेगा । वह आत्मा अपनी श्रद्धा प्रमाण शांति-यज्ञ में जो भी सहयोग देगा उसी का फल मिलेगा । ज्ञान-योग की शिक्षा पाकर के शांति के इस नवीनतम ईश्वरीय सेवा का प्रयोग वह आत्मा अगर करेगी तो वह आत्मा सतयुग या त्रेतायुग में अपना वर्सा परमात्मा से प्राप्त कर सकेगी । अगर ज्ञान-योग के बिना भक्ति की रसम प्रमाण जप, तप, प्रार्थना या पठन-पाठन किया होगा तो द्वापर से शुरू होनेवाली भक्तिप्रधान सृष्टि में भी ऊंच पद पाने का उस सहयोगी आत्मा को सौभाग्य मिलेगा । वर्तमान समय में कल्प की संपूर्ण नव-रचना या नवनिर्माण हो रहा है इसलिये सभी युगों में नंबरवार श्रेष्ठ पद प्राप्त करनेवाली आत्माओं को इस संगम समय पुरुषार्थ करना होगा और इस पुरुषार्थ का बल या मार्गदर्शन इस सहयोगात्मक सेवा द्वारा सामनेवाले व्यक्ति को अच्छी रीति से मिल सकता है । यही इस नवीनतम सहयोगात्मक सेवा की खूबी है ।

समग्र की कल्याण की भावना है इस विश्वशांति अभियान में और इसी कार्य के द्वारा एक अन्य बात की भी लक्ष्य पूर्ति होगी । यह सिद्ध होगा कि ''ब्रह्माकुमारियां'' यह कोई एक सम्प्रदाय, वाद-विवाद या तो जाति नहीं है । इस ईश्वरीय सेवा का लाभ विश्व की सभी आत्माएं ले सकती हैं, यह बात सिद्ध होगी । ''ब्रह्माकुमारियां'' यह एक सम्प्रदाय नहीं परंतु एक सिद्धांत— जीवन को संपूर्ण बनाने की संपूर्ण और सर्वांगीण साधना है, यह सिद्ध होगा और इस अभियान से परमपिता परमात्मा विश्व वंद्य है, सर्व-आत्माओं के पिता हैं और सभी उनसे अपना वर्सा रूपी ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार ले सकेंगे, यह सिद्ध होगा ? सहकारात्मक सेवा के अन्य भी बहुत प्रकार हैं जिन प्रकारों की चर्चा अन्य लेखों द्वारा मैं करूंगा परंतु आज तो यही अपेक्षा रखता हूं कि हमारे सभी बहन-भाई इस सहकारात्मक ईश्वरीय सेवा द्वारा इस विश्वशांति अभियान को सफल करें और उसी की सफलता से अपने जीवन को सफल और संपूर्ण बनायें । □

कलकत्ता : ब्र० कु० पुष्पा प० बंगाल के यातायात मन्त्री भ्राता रेबिन मुखर्जी को राखी बांधते हुए।

"सम्पूर्णता हमारा लक्ष्य है"

□ब्र.कु. उर्मिला., कैथल

पहले दिन जब हमें बाबा का परिचय मिला था तो समझाने वाले ने हमें इस आध्यात्मिक स्कूल का लक्ष्य भी बता दिया था। इसका लक्ष्य है सम्पूर्णता अर्थात् लक्ष्मीनारायण बनना और साथ-साथ उसने यह भी बता दिया कि जैसे डॉक्टर के पास बैठने से डॉक्टर का धन्धा और अध्यापक के पास बैठने से पढ़ाई आ जाती है उसी प्रकार जो सम्पूर्ण है उसकी समीपता से सम्पूर्णता भी आ जाएगी। हमें अच्छा लगा कि सम्पूर्णता हमें इतनी आसानी-से मिल रही है और हमने प्रतिदिन ज्ञान-पान करना शुरू कर दिया।

अनुभव कहता है कि किसी भी कार्य की शुरुआत और समाप्ति के बीच का समय या दूरी कम हो या ज्यादा इसके बीच में प्रलोभन (Temptation) और रुकावटें दोनों आती हैं। रुकावटों को तो हम जैसे-तैसे पार कर लेते हैं परन्तु कई बार बीच की चीज़ें मायावी रूप धारण करके मंज़िल जैसी लगने लगती हैं और हम खड़े हो जाते हैं यह सोचकर कि मंज़िल पर पहुंच गए हैं। थोड़े से सुख को पाकर सम्पूर्ण सुख की तरफ से लापरवाह हो जाते हैं। जैसे कोई मुसाफिर लम्बी यात्रा पर जा रहा है। दूर-दूर तक सूखी पहाड़ियां हैं परन्तु ज्यों हरियाली खेती के रास्ते से गुजरता है पानी की कल-कल ध्वनि, ठंडी समीर उसे पकड़ लेती है और मीठी-मीठी लोरियां सुनाकर निंद्रा देवी की गोद में भेज देती है। मुसाफिर सोचता है यहां तो मुझे बड़ा सुख मिल रहा है शायद मैं मंज़िल पर पहुंच गया हूं और वहीं खड़ा-खड़ा उस प्राकृतिक दृश्य की मधुरता में खो जाता है। और उतना ही मंज़िल पर पहुंचने में देरी होती जाती है जहां पहुंचकर उसे शाश्वत सुख मिलना है अधूरा नहीं।

ज्ञानमार्ग पर चलना ही हमारी एक लम्बी यात्रा है जिसके इस छोर पर है कलाहीन दुखी अशांत जीवन और दूसरे छोर पर है १६ कला सम्पूर्ण, सुख, शांति, पवित्रता से भरपूर जीवन। जिस दिन से हम यह यात्रा शुरू करते हैं हमारे जीवन में सुख की कड़ियां जुड़नी शुरू हो जाती हैं। और दुख की ज़ंजीरें टूटने लगती हैं। और जिस दिन मंज़िल पर पहुंच जाते हैं उस दिन सम्पूर्ण सुख की प्राप्ति और दुख, रोग, शोक का तिरोहण हो जाता है। परन्तु इस लम्बी यात्रा के बीच में आने वाले अनेकानेक सुखद क्षण रोमांचक घड़ियां कई बार सम्पूर्णता की मंज़िल को भुला देती हैं। कई बार दैवी परिवार का स्नेह, सौहार्द, लेन-देन हमें महसूसता कराने लगता है कि बस सतयुगी सम्पूर्ण रिश्तों का सुख मिल गया है अब पुरुषार्थ की क्या जरूरत है। कई बार परमप्रिय परमात्मा की छत्र-छाया में पलता हुआ उन्मुक्त जीवन यह भासना देने लगता है कि अब न पुरुषार्थ की जरूरत है न मेहनत की. यही सुख शाश्वत है। ठीक है, यह सभी बातें रास्ता ठीक होने का इशारा दे रही हैं परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए यह यात्रा का वह भाग है जो हरियाली में से गुजर रहा है। अत: इस हरियाली के सुख को भोगें परन्तु इससे मोह करके न बैठ जाएं। और कल जब पहाड़ियों, गुफाओं में से गुजरना पड़े तब असफल हो जाएं या घबरा जाएं। इसलिए बाबा भी हमेशा कहता है बच्चो, बेशक निश्चिंत जीवन जीते जाओ परन्तु यह कभी न भूलें कि पुरुषार्थ करना है अर्थात् पुरुषार्थ की चिंता बनी रहे। इसी प्रकार हमारी सम्पूर्णता की मंज़िल में भी अगर हम सुख-दुख, प्राप्ति-अप्राप्ति स्तुति, निन्दा के भाव से दूर होकर एकटिक मंज़िल को निशाना बनाकर बढ़ते जाएंगे तो निश्चय ही मंज़िल बिना मेहनत के मिल जाएगी। नहीं तो विनाश का समय निश्चय ही यात्रा का कंटीला रास्ता है। और वही वास्तव में हमारी परीक्षा है जिसकी तैयारी में हम सभी जुटे हुए हैं। इसी परीक्षा के लिए बाबा सावधानी देते हैं कि सेकेंड में संकल्पों को कंट्रोल करना सीखो तभी हर परिस्थिति का सामना कर सकेंगे।

कई बार हम यह सोचकर लापरवाह हो जाते हैं कि इतने दिन पुरुषार्थ करते हुए बीत गए अब हमारे विकर्म हैं ही नहीं, अब तो हम विकर्माजीत बन गए परन्तु साकार बाबा के जीवन की तरफ झांकने से हमारी यह धारणा गलत सिद्ध हो जाती है। इतना तीव्र पुरुषार्थी होने पर भी बाबा आखिरी क्षण तक पुरुषार्थी था। बाबा जो पहला नम्बर थे उन्हीं के विकर्म शरीर और आत्मा के अलग-अलग होने तक समाप्त नहीं हुए थे तो हमारे अभी शरीर में रहते कैसे हो सकते हैं। अत: हम यह निश्चय करें कि सम्पूर्ण बनना ही है और इसके लिए दो ही साधन हैं एक तो अंतर्मुखी रहना और दूसरा सम्पूर्ण परमात्मा के सम्मुख रहना। तभी संग का रंग लग सकेगा। □□

कहानी

हरी-भरी दुनिया !

□ब्र.कु. प्रतिभा., परतवाड़ा

करमपुर गांव की सीमा पर एक तालाब था, बहुत बड़ा और गहरा। तालाब सेठ हीरालाल ने बनवाया था। तालाब में हमेशा पानी भरा रहता था। इसी कारण आसपास के गांववाले तथा वहां के पशुपक्षियों को पानी की कमी नहीं थी। तालाब के किनारे एक छोटी-सी कुटिया में एक साधू रहते थे। उन्हें लोग बाबाजी कहकर पुकारते थे।

बाबाजी बहुत परिश्रमी थे। अपनी कुटिया के आसपास की ज़मीन को खेती बनाकर खूब फल-साग-सब्जी उगाते थे। स्वयं भी खाते और गांववालों को भी खिलाते थे। बाबा के परोपकारी स्वभाव से सभी प्रसन्न थे। उन्हें आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। कोई भी काम शुरू करने से पहले बाबाजी की सलाह अवश्य लेते थे।

एक समय की बात है, गर्मी के महीने थे। इस बार भयंकर गर्मी से लोग बेचैन हो उठे। धरती तवे की तरह तपने लगी। नदी-नाले, कुएं, तालाब आदि सूख गए। चारों ओर पानी के लिए त्राहि-त्राहि मच गई।

मगर वह बाबाजी का तालाब अभी तक नहीं सूखा था। तालाब के किनारे पानी के लिए भीड़ लगी थी। लोगों को विश्वास था यह तालाब नहीं सूखेगा। लेकिन जब बरसात के महीनों में पानी नहीं बरसा तो एक दिन वह तालाब भी सूख गया।

तालाब के सूख जाने पर आसपास के गांवों के लोग घबराए। बाबाजी के पास गए और बोले "बाबाजी—अब क्या होगा! पानी के बिना जीवन की रक्षा कैसे होगी?"

गांववालों को धैर्य देते हुए बाबाजी ने कहा—"घबराने से कोई काम नहीं बनता। जमीन के नीचे पानी का अथाह भंडार है। इसी तालाब के किसी एक हिस्से को खोदो। उसे इतना गहरा बना दो कि पानी की धारा फूट पड़े।

बाबाजी के कहने की देर थी गांव के लोग फावड़े, कुदाल ले, तालाब के किनारे इकट्ठे हो गए। थोड़ी देर विचार हुआ—तालाब की खुदायी कहां से हो! ताकि पानी जल्दी मिल सके। तालाब के किनारे कई पेड़ थे। भयंकर गर्मी के कारण सभी पेड़ सूख गये। केवल एक पेड़ हरा-भरा था। लोगों ने सोचा हरे पेड़ के निकट खुदाई करने पर पानी जल्दी निकलेगा। बस, वही खुदाई शुरू हो गई। लगातार चार दिन खुदाई हुई। पानी नहीं निकला। लोग उदास हो गए। मारे चिंता के बाबाजी ने भी कुछ खाया-पिया नहीं। वह ज़मीन पर लेट गए। उन्होंने एक सपना देखा। सपने में हरा पेड़ कह रहा था—"बाबाजी, जहां आप लोग खुदाई कर रहे हैं, वहां तो पानी बहुत नीचे है। तालाब के उत्तर-पश्चिम कोने में खुदाई कीजिए। पानी मिल जाएगा। बाबाजी बोले—"उस कोने के पेड़ तो एकदम सूख गए हैं। सूखे पेड़ों के निकट खुदाई करने से पानी कैसे जल्दी मिल सकता है?"

नहीं, बाबाजी! उस कोने में पानी अधिक नीचे नहीं है। तीन-चार घंटे खुदाई करने पर ही पानी निकल पड़ेगा। हरा पेड़ बोला। हरे पेड़ की बात सुन बाबाजी सोच में पड़ गए। तुम्हारे निकट पानी बहुत अधिक नीचे है, फिर भी तुम हरे हो। उस कोने में पानी अधिक ऊंचे होने पर भी वह पेड़ सूख गया ऐसा क्यों? थोड़ा मुस्कराते हुए पेड़ ने कहा—"बाबाजी मेरी जड़ें बहुत नीचे तक पहुंची हैं। वहां से पानी लेकर मुझे हरा-भरा रखती हैं। मेरी जड़ों के दूर तक पहुंचने का एकमात्र कारण है—आपसी सहयोग। वे आपस में टकराती नहीं। आगे बढ़ने में एक-दूसरे की मदद करती हैं। मेरी जड़ों ने मिलकर मुझे इतना शक्तिशाली बना दिया है। उत्तर-पश्चिमी कोने के पेड़ के सूखने का राज है, उस कोने में जल का भंडार अधिक नीचे नहीं है। फिर भी पेड़ की जड़े आपस में टकराती रहीं। एक-दूसरे के मार्ग में बाधक रहीं। इसलिए जल भंडार तक नहीं पहुंच पाईं। बाबाजी की आंखें खुलीं। सबेरे उन्होंने रात के सपने के बारे में लोगों को बताया। उत्तर-पश्चिमी कोने में खुदाई शुरू हुई। सपना सच निकला। तीन-चार घंटे की खुदाई के बाद पानी की धारा फूट पड़ी। तालाब फिर पानी से भर गया। लोगों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। बाबाजी और हरे पेड़ की जयजयकार होने लगी।

सच तो है कि आज इस दुनिया में मनुष्य आत्मा के अंदर सहयोग, एकता की भावना नहीं है। देह अभिमान के कारण आपस में टकराते रहते हैं। इसलिए यह दुनिया-सृष्टि (वृक्ष) सूख गया। माया के आकर्षण के कारण यह दुनिया हरी-भरी दिखाई देती है।वास्तव में है तो जहां-तहां दुख-अशांति, सुख-शांति रूपी हरियाली कहीं पर भी दिखाई नहीं देती।

तो आइए, हम सभी एक ज्ञानसागर शिवबाबा की श्रीमत के अनुसार चलें। सदा एकमत होकर चलें, एकाग्र होकर चलें तो कभी आपस में टकराव पैदा नहीं होगा। यही हमें सबसे बड़ा सहयोग देना है। इसी सहयोग से कलियुगी रूपी सूखी दुनिया जल्दी खत्म होकर नयी हरी-भरी स्वर्णिम सुखमय दुनिया आने में देरी नहीं होगी। □

जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना !

□ले.-ब्र.कु. त्रिवेणी देवी पोद्दार., मुज़फ्फरपुर

जगत में व्याप्त सर्व प्रकार की सम्पत्तियों में श्रेष्ठतम संपत्ति है शांति । शांति मिलती है सुख से और जीवन सुखी होता है कमाई करने से । आमदनी जितनी बढ़ेगी, सुख बढ़ेंगे और शांति मिलेगी । आमदनी का आधार है कमाई !

कमाई का पाथेय है एकता । हम जितना अधिक मिलकर चलते हैं, स्नेह, प्यार और सहानुभूति का बाजू थामे रहते हैं, हमारी तरक्की होती जाती है; किंतु छोटा-सा भी मतभेद हमें ले डूबता है, उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है ।

हम व्यापारी है । हम व्यापार करते हैं ज्ञान-रत्नों का । हम कोई मामूली व्यापारी नहीं, अपितु सेठ हैं ! बड़े सेठ ! जो आयात-निर्यात करते हैं अमन-चैन का ! सुख-शांति का, प्रेम-प्यार का !

हमारा आयातित (Imported) माल ईश्वरीय कम्पनी से आता है और हम उसका निर्यात रावण राज्य में बनाम कलियुगी लंका में करते हैं । हमारे माल की मांग (Demand) सप्लाई से अधिक है ।

हम जितना ही अधिक निर्यात करेंगे, आयात की सीमा उतनी ही अधिक बढ़ेगी । व्यापार मुख्यत: निर्यात पर निर्भर करता है, न कि आयात पर । अगर आयातित माल का निष्कासन न हुआ तो क्या होगा ? गोदाम भरा रहेगा, पूंजी रुकी रहेगी, आमदनी अटकी रहेगी ।

हम सौदागर हैं स्नेह, प्यार, सौहार्द आदि दैवीगुणों के । हम जितना-जितना इसे खर्च करेंगे, जितना जल्दी लोक मंगल के लिए इसे वितरित करेंगे, हमारी ईश्वरीय कम्पनी उतना ही माल और उतना ही जल्दी हमें सप्लाई करेगी । फलस्वरूप हम दिव्य गुण लाभ से लाभान्वित होंगे । हम खर्च किए बिना नया माल मंगा नहीं सकते । जब तक मेघ पानी नहीं बरसा लेता, सूर्य नीचे का पानी सोख मेघ को दे नहीं सकता । निर्यात बढ़ेगा, आयात बढ़ेगा और आयात बढ़ेगा तो आमदनी बढ़ेगी । हम सांस द्वारा जितना ही कार्बन डॉयक्साइड छोड़ते हैं उतना ही ऑक्सीज़न वायुमंडल से ग्रहण करते हैं । सांस छोड़ने की गति जितनी तेज़ होगी लेने की भी उतनी ही तेज़ होगी । अगर सांस रोकेंगे दम घुटेगा, मृत्यु के ग्रास बनेंगे ।

जब हम व्यापारी हैं तो हमें हर हालत में व्यापार के नियमों पर चलना ही होगा । कभी नफा भी हो सकता है तो कभी नुकसान भी; किंतु हर हाल में धैर्य, साहस और बुद्धिमानी को पकड़े रहना होगा । जिसमें घाटा सहने की ताकत नहीं वह अच्छा मुनाफा भी नहीं प्राप्त कर सकता । व्यापारी का पहला लक्षण है साहस फिर धैर्यता और इन सभी से ऊपर चाहिए मधुरवाणी जो ग्राहकों को आकर्षित कर सके ।

ज्ञान के इस व्यापार में बड़े-बड़े ज्ञानी, ऋषि-महर्षि अपने पथ से केवल इसलिए विचलित हो गये, क्योंकि सब-कुछ छोड़ने के बाद भी अहंकार उन्होंने नहीं छोड़ा । मैंने कार्य किया, ऐसा भाषण दिया, तर्क में उसे तो यूं परास्त किया कि पानी-पानी हो गया । हममें से अधिकांश की यही मनसा होती है कि हमारे व्यापार की चर्चा हो, मुझे देख लोग फुसफुसाने लगें, भाषणों पर तालियों की गड़गड़ाहट हो, हर कार्य पर वाह-वाह मिले । अगर यह सब हुआ तब तो ठीक वरन् हम निरुत्साहित हो जाते और हमारा व्यापार मंदा पड़ जाता ।

हम व्यापारी हैं कोई भिखारी नहीं जो एक टुकड़ा पाकर संतोष कर लेंगे । हमने एजेंसी ली है । स्नेह, प्यार, सद्भावना, सौहार्द, सहानुभूति आदि की । ऊपरवाले से लेना और नीचवालों को देना, बस, इतना ही तो करना है हमें । लेकिन कभी-कभी हम इस खेल में हार भी जाते हैं । हम भिखारी से भी गये-गुज़रे बन जाते हैं । कैसे ?

हम प्यार के बदले प्यार, स्नेह के बदले मान-सम्मान और उपकार के बदले कुछ नहीं तो वाह-वाही अवश्य चाहते हैं । भिखारी तो कम-से-कम एक टुकड़े पर संतोष भी कर लेता है किंतु हमें इतने से संतोष नहीं मिलता, थोड़ा और,थोड़ा और, और... । जैसे कि अंतर्राष्ट्रीय भिखारी (International Beggar) हैं । इतने पर भी कोई हर्ज़ नहीं होता, किंतु रोना तो इस बात का है कि हम अपने किये का फल (Return) तुरंत (Immediate) चाहते हैं । देर का इंतज़ार नहीं करते । सब्र टूट जाता है ईश्वरीय कम्पनी से मुंह फुला लेते और अपना बिजनेस ही बदल देते । तो क्या करते ? रावण के कम्पनी से माल मंगाने लग पड़ते ईर्ष्या, द्वेष और वैमनस्यता का बंडल । खुदरा खरीदते, खुदरा बेचते, नफा कम, नुकसान

ज्यादा । थोक विक्रेता से खुदरा (Retail) पर आये वह भी नहीं चला, अशांति बढ़ी, चिड़चिड़ा बने, ग्राहक भड़का, दुकान बंद, धंधा ठप्प !

व्यापार में तीन प्रकार की पूंजी चाहिए । एक पूंजी हाथ में, दूसरा उधार खाता और तीसरा विक्रय वस्तु । इन तीनों के बीच संतुलन रखना ही होगा । कोई माल अधिक दिनों तक उधार ही लगा रहता । अच्छे व्यापारी इसके लिए नहीं घबराते । यह सोचकर निश्चिंत रहते कि आज नहीं तो कल मिलेगा ज़रूर । अगर डूब ही गया तो उसके कारण अपना धंधा क्यों बर्बाद करें ।

कभी-कभी हम वास्तव में उल्टे पांव चलने लग पड़ते हैं । कैसे ? हम अपने किए का प्रतिफल तुरंत चाहते हैं, जैसे दास । सेवक मेहनत किया, मेहनताना के लिए हाथ फैलाया । फिर भी वह हमसे अच्छा है कम-से-कम एक महीना तक तो इंतज़ार ज़रूर करता है । हम तो थोड़ा भी सब्र नहीं रख पाते ।

सच तो यह कि सभी कर्मों का फल अवश्य मिलता है... देर या सबेर । बस, थोड़ा धीरज़ चाहिए । बीज़ से फल लगने में समय तो लगेगा ही । हम पहले बीज़ डालें, फिर पौधा उगेगा, फिर फूल खिलेंगे, फिर फल बनेगा । कम-से-कम इतना तो इंतज़ार करना ही पड़ेगा । अगर इतना इंतज़ार नहीं कर सकते तो बेहतर है बीज़ बोने के बजाय हप ही कर लें, फिर एक से अनेक फलों की आश छोड़नी पड़ेगी ।

हम दर्पण के सामने कभी खड़े होकर देखें । हम हंसते हैं, दर्पण हंसता दिखाई देता है, रोते हैं, दर्पण रोता है, गुनगुनाते हैं वह भी गुनगुनाता है, मुंह चिढ़ाते हैं तो वह भी मुंह चिढ़ाता है । ठीक इसी प्रकार हम जो भी कार्य करते हैं, जैसे करते हैं, ठीक वैसे ही और वैसा ही जवाब मिलता है । ठीक ही कहा है गीता में—''**कर्म किए जा, फल की चिंता मत कर ए इंसान !**''

व्यापार के मामले में हमें अत्यंत संवेदनशील रहना होगा । नाहक के ईर्ष्या, द्वेष, भ्रम आदि को भुलाकर प्रेम-प्यार से अपने व्यापार (पुरुषार्थ) को बढ़ाते रहने में ही कल्याण है । बाज़ार में मंदी है या तेज़ी, अगर हमारा व्यवहार प्रेमपूर्ण है तो हम मंदी या तेज़ी से प्रभावित नहीं हो सकते ।

अधिकांश मामले में मतभेद का कारण होता है । हम किसी से कम नहीं । अर्थात् मैं-पन । जब तक इस क्षुद्र मैं-पन से मुक्त नहीं होंगे आगे नहीं बढ़ सकेंगे । कई दुकानों में लिखा मिलता है, ''ग्राहक हमें देने आते हैं, लेने नहीं ।'' स्पष्टत: हम किसी को नहीं देते । हम सबसे कुछ-न-कुछ लेते ही हैं । अगर गुणी से गुण उठाते तो अवगुणी भी कुछ-न-कुछ सिखाकर ही जाता है ।

जरा देवताओं की नगरी में तो झांके—जहां समग्र शांति थी, अमन-चैन की बांसुरी बजती रहती थी, चारों तरफ भाईचारा व्याप्त था । आखिर उसका कारण क्या था ? आखिर क्यों देवताएं आज भी पूजे जाते हैं ? कारण जाहिर है । देवताएं एकमत थे, एकमन थे, एकचित थे, जिस कारण भाईचारा बरकरार था, एकता थी, अनेकता का नामोनिशान नहीं था । जब मत ही एक था, तो मतभेद कहां से आयेगा और जब मतभेद नहीं तो अशांति भी नहीं ।

हमें भी ऐसी ही दुनिया बनानी है । प्रेम-प्यार की दुनिया, अमन-चैन, सुख-शांति की दुनिया, देवताओं की दुनिया । यह काम किसी भिखारी से नहीं हो सकता । तो क्यों न हम व्यापारी वर्ग ही आगे बढ़ें और एक लय-ताल से एकजुट होकर राम-राज्य की स्थापना में लग जायें ।

तो आइए, हम सभी भाईचारा स्थापित करने चल पड़ें । एकमन, एकमत और एकचित होकर । लौटा दें रावण का माल मतभेद, भ्रम और कलहकी पिटारी उसकी हवेली में और फिर एजेंट बन जाएं परमात्मा के !

हमारी धरोहर है सुमति । जहां सुमति है वहां सर्व प्रकार की सम्पत्तियों की खान है, हरियाली है । कुमति है रावण की धरोहर जो विपदा का कारण है । तुलसीदास ने ठीक ही लिखा है—

''जहां सुमति तहं सम्पत्ति नाना,
जहां कुमति तहं विपत्ति निदाना । □

(पृष्ठ २३ का शेष)

आत्माओं को मालामाल करने की सेवा भी कर सकेंगे ।

सुशील—मैया, आपकी अनुभवयुक्त बातें सुनकर मेरा मन आनन्द-विभोर हो रहा है । क्योंकि मैंने अच्छी तरह अनुभव किया है कि—''**चिंता की चिंगारी, दुख देती है महाभारी**'' अर्थात् ''**चिंता की आग, चटकर देती है दिल-दिमाग ।**'' अभी तो मैंने पक्का निश्चय किया है कि हर हालत में इस दुखदाई चिंता को तलाक देकर चिंतन में जुट जाना है ।

शशीन—हां, क्योंकि चिंतन से ही चित्त की वृत्तियां शीतल होती हैं, और धैर्यता, गम्भीरता, निर्भयता और हर्षितमुखता जैसे दिव्य गुण स्वत: ही जीवन का अंग बनते हैं जिससे हम स्वस्थ और सुखी जीवन जी सकते हैं ।

"गरीबी का कारण चरित्रहीनता"

□ब्र.कु. प्रकाश., भोपाल

"वर्तमान युग विज्ञान के चरमोत्कर्ष का युग माना जाता है। आज जहां एक ओर वैभव के उत्कृष्ट साधन उपलब्ध हैं, दूरदर्शन, वायुयान व रॉकेट जैसे यंत्रों ने संसार की दूरियां कम कर दी हैं। मनुष्य का सारा कार्यभार रोबोट व कम्प्यूटर ने संभालकर उसकी दिमागी परेशानी कम कर दी है तथा उसका जीवन सुखमय बना दिया है। वहीं दूसरी ओर देश और विश्व के जनमानस में भविष्य के प्रति असुरक्षा, भय व कुंठा पनप रही है। सामान्य जनजीवी विज्ञान व भौतिकता की चकाचौंध तथा सामयिक समस्याओं की ऊहापोह में स्वयं को असहाय व मझधार में डूबता महसूस कर रहे हैं। वह निर्णय नहीं कर पा रहे हैं कि जीवन यापन का कौन-सा तरीका अपनाया जाए? आवश्यकताओं की संतृप्ति बिंदु कहां है? सच्ची शांति व चैन कहां है?"

गरीबी एक ज्वलंत समस्या

वर्तमान युग का सर्वेक्षण करने पर गरीबी, भुखमरी, बेरोज़गारी, जनसंख्या वृद्धि व मूल्यवृद्धि, मिलावट व भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं सामने आती हैं परंतु इन सभी में ज्वलंत समस्या "गरीबी" ही मानी जाती है। देश के कर्णधार व समाजसेवी "गरीबी हटाओ" अभियान में जुटे हुए हैं। देश के प्रिय नेतागण भी जनता के आगे-पीछे गरीबी हटाने व समाजवाद लाने के झूठे-सच्चे वायदे करते हैं। सरकार इसके लिए अनेकानेक विकास योजनाएं, कल्याण-केंद्र तथा राहत कार्य भी चला रही है परंतु गरीबी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

गरीबी के कारणों पर अनुसंधान करनेवाले समाजशास्त्री, और मनोवैज्ञानिक अंकेक्षक अब तक इस समस्या का कारण—अशिक्षा, जनसंख्या वृद्धि, मूल्यवृद्धि व बेरोज़गारी आदि बताते रहे हैं। जो पूर्णत: संतोषजनक नहीं लगते। तो आइए, इनसे हटकर कुछ अन्य बिंदुओं पर क्रमवार विचार करें—

वास्तव में काम, क्रोध, मोह, लोभ व अहंकार के वश किया गया कर्म चरित्रहीनता है व चरित्रहीनता ही सर्व समस्याओं की मूलक है।

1. ग्रामीण अंचलों में गरीबी का कारण आर्थिक विपन्नता या कुछ और...!

वर्तमान उद्देश्य हीन शिक्षा ने ग्रामीण व पिछड़े वर्ग को साक्षर तो बना दिया है परंतु वह उसे जीवन का लक्ष्य नहीं दे सकी है। इसका चरित्र ऊंचा नहीं उठा सकी है। गहराई से देखें तो इस खोखली शिक्षा-नीति व शहरी जीवन की मायावी चमक-भड़क ने गांव के भोले-भाले बालक को और ही ज्यादा आरामतलब, फ़ैशनपरस्त व अकर्मण्य बना दिया है। प्राचीन समय में ग्रामीण मेहनतकश होते थे, कृषि में भरपूर रूचि लेते थे, उनके कुटीर-उद्योग होते थे जिससे गरीबी व भूख दोनों मिट सकती थी परंतु आधुनिक परिवेश में पले अहंकारी युवक कृषि या लघु कुटीर कार्य करना या मेहनत-मज़दूरी करना शान के खिलाफ समझते हैं। पूर्वजों की गाढ़ी कमाई वे फ़ैशन व ऐश में गंवा देते हैं तथा देश की बेरोज़गारी की समस्या को और ही विकराल बनाते जा रहे हैं। इस प्रकार यदि देखें तो यहां अर्थ की नहीं सामर्थ्य की कमी है, पुरुषार्थ की कमी है।

2. दलित-वर्ग व रूढ़ियों में उलझे समाज की गरीबी

दलित व आदिवासी वर्ग के लोग अनेक अंधविश्वासों, कुरीतियों व व्यसनों (व्यभिचार, शराब, बीड़ी, जुआ) आदि के वश दिन-प्रतिदिन स्थूल धन के साथ-साथ अपनी शारीरिक व आत्मिक तथा चरित्र रूपी पूंजी खोते जा रहे हैं। धार्मिक आडम्बरों, नशाखोरी, जुआं आदि व्यसनों में उनकी आय के बहुत बड़े अंश का अपव्यय हो रहा है जबकि भोजन व अन्य आवश्यक वस्तुओं पर उनका न्यूनतम खर्च है। दहेज़-प्रथा जैसी समस्या भी समाज के लिए बदनुमा दाग है। यह एक सामाजिक चरित्रहीनता है जिससे धन के लोभवश हत्या जैसे जघन्य अपराध हो रहे हैं। कुछ पिछड़ी जातियां ऐसी भी हैं जो रूढ़िवाद में फंसी हैं तथा गरीबी को ईश्वर का वरदान मानकर जी रही हैं। वे अज्ञानवश ईश्वर को ही अच्छे-बुरे हर कर्म का प्रेरक समझती हैं तथा श्रम द्वारा श्रेष्ठ कर्म द्वारा ऊँचा उठने का प्रयास ही नहीं करतीं।

3. मध्यम व सामान्य वर्ग की गरीबी

मध्यम व सामान्य वर्ग के लोगों में साधनों की स्पर्धा व ईर्ष्या व्याप्त है। उनमें भौतिकता की मृग-मरीचिका, अश्लीलता व अभद्रता का प्रेत जागृत है। अश्लील चलचित्र, अश्लील साहित्य व आधुनिकतम लिवास उनकी मनोदशा को और भी दूषित एवं पंगु बनाते जा रहे हैं। इसके अलावा शराब, सिगरेट, व्यर्थ खान-पान, आधुनिक परिवेश में जोरों-से पनप रही है जिससे फ़िजूलखर्ची, चरित्रहीनता बढ़ती जा रही है। इस प्रकार वे सदा दुखी-अशांत नज़र आते हैं। आर्थिक कारणों से ही पारिवारिक झगड़े होते रहते हैं। आर्थिक दृष्टि से निर्बल यह वर्ग प्राय: कभी सरकार व उसकी नीतियों को, कभी ईश्वर तथा कभी स्वयं के भाग्य को दोषी ठहराते पाये जाते हैं। वे कभी स्वयं में झांककर नहीं देखते तथा अपनी त्रुटियों को नज़र-अंदाज़ करते हुए आकर्षणों से जकड़े हुए स्वयं को "गरीब शब्द" से सम्मानित करने में ज्यादा गौरव महसूस करते हैं। पुरुषार्थ को नकारते हुए वे भाग्यवादी व अकर्मण्य बन जाते हैं। दूसरी ओर समाज के आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न व्यक्तियों से तुलना करते हुए स्वयं को बदनसीब व गरीब मान बैठते हैं। उनका मनोबल गिरता जाता है, उनमें हीनता व कुंठा जागृत होती जाती है। स्पर्धा व ईर्ष्या के दौर में उन्हें असंतोष व अशांति के सिवा और कुछ नहीं प्राप्त होता।

4. समाज का अधिकांश समृद्ध व्यक्ति और भी बड़ा गरीब है

इसी भांति यदि सूक्ष्मता से विचार करें तो सामान्य वर्ग के अलावा आधुनिक समाज में वैभवशाली व समृद्ध कहलाने वाले व्यक्ति भले भौतिकता से सम्पन्न है, परंतु उनमें मानसिक व आध्यात्मिक विपन्नता है। चारित्रिक गरीबी है। व्यक्तित्व में अपूर्णता है, जीवन में अप्राप्ति है, लक्ष्य में अधूरापन है, मन में अशांति व असंतोष है तो क्या उन्हें धनवान या समृद्ध कहा जाना उचित है? फिर जो धन उन्हें सच्ची सुख-शांति नहीं दे सकता वह किस काम का?

5. गरीबी का यथार्थ भाव

उपरोक्त परिचर्चा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यदि मानव में आत्मविश्वास व सच्चरित्रता है तो कोई भी भौतिक व आर्थिक अभाव उस गरीबी की महसूसता नहीं करा सकता ऐसा व्यक्ति स्वयं के श्रम से श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण कर लेता है। इस प्रकार श्रेष्ठ चरित्र रूपी अविनाशी पूंजी से जनमानस की स्थूल व सूक्ष्म गरीबी अवश्यमेव दूर हो जाएगी। फिर ईश्वर ने सबको दो हाथ, दो पैर दिये हैं, मन, बुद्धि व शक्ति दी है। मनुष्य के विचार या कर्तव्य ही उसे गरीब या अमीर बनाते हैं। अतएव गरीबी एक मनोबलहीनता है, आत्म दुर्बलता है। गरीबी एक संकुचित विचारधारा है। गरीबी अकर्मण्यता व निष्क्रियता का प्रमाण है। असंतोष व तृष्णा ही गरीबी शब्द की व्युत्पत्ति है। गरीब वह जो चरित्रहीन है। वास्तव में आत्मा के अविनाशी खजाने में पवित्रता, सुख-शांति है, जिनका मूल स्रोत गुणों व शक्ति का सागर ईश्वर है। अतएव यह कहा जा सकता है कि ईश्वर व उसकी शक्तियों की अनभिज्ञता ही गरीबी का यथार्थ भाव है।

6. चरित्र ही जीवन की अमूल्य निधि है

अतत: यह बात सिद्ध होती है कि धन ही सर्वस्व नहीं है वरन् चरित्र का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि धन खोकर फिर कमाया जा सकता है परंतु खोया चरित्र वापस नहीं आता। साथ ही यह स्पष्ट है कि धनवान व्यक्ति का चरित्र भ्रष्ट होने पर व व्यसनों के वशीभूत, वर्षों की कमाई क्षण में गंवा देता है और कंगाल बन जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि धन गया तो कुछ नहीं गया, चरित्र गया तो सब-कुछ गया। सतयुगी सम्पन्नता का आधार भी श्रेष्ठ चरित्र व पवित्र विचार ही था। कहा भी जाता है पवित्रता ही सुख-शांति की जननी है अथवा चरित्र ही सबसे बड़ी पूंजी है। (Character is the greatest treasure) श्रेष्ठ चरित्र का भाव श्रेष्ठ धर्म (धारणा) या श्रेष्ठ कर्म से है। जिसका ज्ञान मनुष्य के पास नहीं है। अतएव स्वयं परमात्मा शिव वर्तमान समय श्रेष्ठ ज्ञान व राजयोग की शिक्षा देकर मानव मात्र का चरित्र श्रेष्ठ बना रहे हैं। पवित्रता, सुख-शांति, संतोष रूपी अमूल्य खजाने उस परमात्मा के सानिध्य से त्रास्त करनेवाली आत्मा सदाकाल के लिए सम्पन्न बन सकती है। □

कलकत्ता : ब्र० कु० पुष्पा पं० बंगाल के लैंड तथा लैंड रीफ़ार्म मंत्री भ्राता बिनोई कृष्ण चौधरी को राखी बांधते हुए।

"चिन्ता से मुक्ति"

□ब्र.कु. आत्मप्रकाश., आबू पर्वत

जैसे अग्नि से सुन्दर मनमोहक फूल मुरझा जाता है वैसे ही चिंता के अग्नि की सेक से कोमल दिल मुरझा जाता है। जिससे मन भी तिलमिलाकर कई रोगों का शिकार बन जाता है। तो आओ, हम सभी मिलकर विचार करें कि कैसे चिंता की अग्नि में जलनेवाले मन को सुरक्षित रखकर उसका विकास किया जाए। तो यहां प्रस्तुत है सुशील व शशीन की पारस्परिक ज्ञान-चर्चा।

आज सुशील का चेहरा एकदम मुरझाया हुआ था। मन की उदासीनता मस्तक पर की चिंताओं की रेखाएं प्रतिभासीत कर रही थीं। आंखें भी निस्तेज थीं और होंठ भी बिना मुस्कराहट के नीरस दिखाई दे रहे थे। बेहद मानसिक तनाव के कारण वह अपना हाथ मस्तक पर रखकर टेबल पर लेटा हुआ था। इतने में उसके परमहितैषी मित्र शशीन का कमरे में आना हुआ।

शशीन—(अचरज से)—क्यों सुशील, आज इतने चिंताग्रस्त क्यों? किसी भी बात की कमी न होने के बाद कौन-सी चिंता कर रहे हो?

सुशील—(कुटिल मुस्कान से)—शशीन भैया, चिंता न करने से काम कैसे चलेगा? इसके बिना तो मनुष्य पुरुषार्थहीन बन जाएगा।

शशीन—(मुस्कराते हुए)—इसका मतलब क्या चिंता करना मनुष्य का स्वधर्म है? नहीं सुशील, ऐसी कोई बात नहीं है।

सुशील—देखो भैया, ऐसा संसार में कोई न होगा जो चिंता न करता हो!

शशीन—हां, मैं भी देखता हूं मेरे दादाजी भी कई बार चिंता में डूबे रहते हैं। एक दिन मैंने उनसे पूछा कि—दादाजी आप सदा कौन-सी चिंता करते रहते हैं? जवाब मिला कि—मेरे पास इतना धन है जो मेरी भविष्य की ३ पीढ़ी खा सकेगी। लेकिन मुझे यही चिंता रहती है कि मेरी चौथी पीढ़ी क्या खाएगी। तो बताओ ऐसी व्यर्थ चिंता करने से भी क्या फायदा?

सुशील—(उदासीनता से)—शशीन भैया, भविष्य की पीढ़ियों की बात तो छोड़ो, लेकिन हमें अपने वर्तमान की चिंता तो करनी ही होगी।

शशीन—सुशील, इसी अज्ञानता के कारण ही तो सभी चिंताओं का बड़ा भारी बोझ सिर पर लिए घूमते हैं। न जाने चिंता करने से उन्हें मिलता क्या है?

सुशील—शशीन भैया, आखिर भी ये चिंता की बुरी बला क्या है?

शशीन—चिंता करना यह मन की विकृत स्थिति है। जब आत्मा माया के वश होती है अर्थात् पराधीन होती है तो सदा भयभीत रहती है। इसी भय के कारण मनुष्य किसी-न-किसी प्रकार की चिंता में फंसा रहता है।

सुशील—भैया, मन में सदा यह भय क्यों रहता है कि पता नहीं मेरा क्या होगा?

शशीन—सुशील, वास्तव में भय होता है पापी को! अगर हमसे मनसा, वाचा या कर्मणा किसी भी प्रकार का पाप नहीं होता तो यह भय समाप्त हो जाता है। वरना यह भय मन में घर कर लेता है।

सुशील—शशीन भैया, कभी-कभी तो चिंता करने से मेरा मस्तिष्क फटने लगता है, ऐसा क्यों होता है?

शशीन—सुशील, मानव मस्तिष्क बहुत अद्‌भुत यंत्र है। चिंता करने से इस यंत्र की गति पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है जिससे सिरदर्द, उच्च रक्तचाप, अलसर, गठिया, मधुमेह आदि बीमारियां होने की सम्भावना रहती है।

सुशील—(अचरज से)—क्या ये सभी चिंता का ही प्रताप है?

शशीन—सुशील, इतना ही नहीं, अगर किसी के मन को भूल-से भी चिंता की चिंगारी लग जाती है तो वह उसे जीते जी जलाकर मौत के घाट पर पहुंचा देती है, इतनी खतरनाक है ये चिंता!

सुशील—हाय! भगवान बचाए इस चिंता की चिंगारी से...?

शशीन—सुशील, किसी ने ठीक ही कहा है—"**फ़िक्र बुरी, फ़ाका भला, फ़िक्र फकीरे खाय**" अर्थात् यदि फकीर भी कोई फिक्र करे तो बेचारा वह भी जल्दी चल बसता है। इसलिए इस फिक्र अर्थात् चिंता को कभी भी अपने पास

फटकने न दो।

सुशील—शशीन भैया, आपकी बात बिल्कुल सत्य है और मैं समझता भी हूं कि चिंता नहीं करनी चाहिए, फिर भी मैं सदा इस चिंता की चक्की में सरसों जैसा पिसता ही रहता हूं। मैं बहुत कोशिश करता हूं निश्चिंत रहने की, फिर भी व्यर्थ संकल्प चलते ही हैं।

शशीन—सुशील, चिंता करने से तो और भी हम मन का संतुलन खो बैठते हैं। यदि कोई अनिष्ट हो भी जाता है तो पछताने से मिलेगा भी क्या? कहावत भी है—"**अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।**" जो होना था वो तो हो गया, उस पर और सोचने से तो और भी अमूल्य समय बर्बाद हो जाता है। इसलिए सदा याद रखें—"**बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि ले**" तो हम सहज ही चिंता से छूट जायेंगे।

सुशील—शशीन भैया, ये तो आपने बहुत अच्छी युक्ति बताई। लेकिन जब कभी मैं नया कार्य करने लगता हूं तो सदा यही चिंता लगी रहती है कि पता नहीं इसमे सफलता मिलेगी या नहीं? ऐसे समय चिंतामुक्त कैसे रहें?

शशीन-सुशील सदा सफलतामूर्त बनने के लिए जीवन में दृढ़ता और साहस को धारण करो और आत्मविश्वास से कार्य करना सीखो। कार्य में किसी भी प्रकार की कमी न रखो तो सफलता निश्चित मिलेगी।

सुशील—भैया, मैं आत्मविश्वास से कार्य तो करता हूं, फिर भी चिंता रहती ही है।

शशीन—देखो सुशील, चिंता करने से तो और भी कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता ही है। और वो ही कार्य हम निश्चिंत होकर करते हैं तो सफलता परछाई की तरह, साथ आती है। चिंता करना अर्थात् असफलता का आह्वान करना।

सुशील—भैया, कार्य करने में किसी भी प्रकार की कसर न रखने के बाद भी जब असफलता मिलती है तो बड़ा भारी धक्का लगता है, और चिंता तेज़ी-से बढ़ती ही जाती है, तब क्या करें?

शशीन—सुशील, असफलता के कारण हिम्मत हारना इंसानियत नहीं है। असफलता भी हमें कुछ विशेष सबक सिखाकर ही जाती है। और वास्तव में असफलता की ठोकरें हंसते-हंसते सहनेवाला ही महान विभूति बनता है।

सुशील—शशीन भैया, आपकी ये प्रभावशाली बातें सुनकर मुझे शक्ति का एहसास हो रहा है, लेकिन सच बताऊं—कभी-कभी मृत्यु के भय की चिंता मुझे बहुत सताती है, इससे कैसे मुक्ति पाएं?

शशीन—सुशील, जबकि हमने जन्म लिया है तो मृत्यु अवश्य होगी ही, इसमें डरने की क्या बात है? जब हम स्वयं को विनाशी शरीर समझते हैं तब ही मृत्यु से भय लगता है। वास्तव में हम तो एक चेतन-आत्मा हैं, जो अज़र, अमर और अविनाशी है अर्थात् जिसका कभी विनाश नहीं होता।

सुशील—(उदासीनता से)—फिर भी भैया, मरने की चिंता तो रहती ही है।

शशीन—सुशील, मरना अर्थात् एक शरीर रूपी वस्त्र उतारकर दूसरा पहनना। जब हमारा शरीर रूपी वस्त्र पुराना हो जाता है तो बदले में हमें नया मिलता है तो पुराने को खुशी-से छोड़ना चाहिए। इसमें घबराने की क्या बात है?

सुशील—लेकिन भैया, कभी दुर्घटना से किसी की अकाले मृत्यु होती है तो उसे देखकर मुझे चिंता लगती है कि कहीं हमारा भी ऐसा न हो!

शशीन—(धीरज देते हुए)—सुशील, अकाले मृत्यु होने का आधार है ही हमारे निकृष्ट कर्म। अगर हमने पिछले जन्मों में ऐसे कुछ कर्म किये होंगे तो उसका फल हमें इस सज़ा के रूप में मिलता है। क्योंकि—"**जैसा जो बोता है, वैसा वह पाता है**" यह इस बेहद नाटक का विधान है।

सुशील—भैया, कभी-कभी दुखी-पीड़ित व्यक्ति को देखते हैं तो चिंता लगती है कि कहीं हमें भी ऐसा जन्म न मिले!

शशीन—सुशील, कभी भी आगे का जन्म हमे वर्तमान संस्कारों के आधार पर मिलता है और संस्कार बनते ही हैं कर्मों के आधार से! तो अगर हम इस जन्म में सदा अच्छे ही कर्म करते रहें तो निश्चित सतोप्रधान संस्कार के आधार से उच्च घराने में जन्म मिलेगा।

बुद्धिवान व्यक्ति जन्म तथा मृत्यु की चिंता के बजाए सदा आत्मा के साथ चलनेवाले अच्छे कर्मों की पूंजी जुटाने में रत रहता है जिससे उसका भविष्य भी उज्ज्वल बनता है।

सुशील—शशीन भैया, आपकी बातें सुनकर हल्केपन की महसूसता हो रही है। लेकिन जब कभी मैं संगठन में विचरण करता हूं, तो सदा मुझे यही चिंता रहती है कि कोई मेरा अपमान न करे, कोई मुझे कठोर वचन न बोले, ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिए?

शशीन—सुशील, जीवन में कुछ करके दिखाने वाले व्यक्ति को ऐसी छोटी-मोटी बातों की चिंता करना शोभायमान नहीं है। लोगों ने किसी को नहीं छोड़ा है। चाहे अच्छा करो,

या बुरा करो, लोग ज़रूर टीका-टिप्पणी करेंगे । उन्हों का काम है कहना, और हमारा काम है सुनकर आगे बढ़ते रहना !

वास्तव में मनोबल से ही इन बातों का सामना किया जा सकता है । इसी हथियार की मदद से कई महावीरों ने संसार में नई क्रांति लाई है, जिन्हों का आजतक भी लोग ज़िक्र करते रहते हैं । और चिंता करने से यह हथियार कमजोर बनता है ।

सुशील—भैया, कहां तक ये बातें सहन करते रहें ?

शशीन—सुशील, लोगों के कटु बोल ही हमारी कमजोरियों रूपी कटुता को निकालकर हमें बलवान बनाते हैं और अपमान सहन करने की शक्ति ही हमे महान हस्ती बनाती है । इसलिए ऐसी बातों की चिंता करना एकदम व्यर्थ है ।

सुशील—(आश्चर्य से)—शशीन भैया, यह ज्ञान आपको कहां से प्राप्त हुआ ? पहले तो कभी आप ऐसी बातें सुनाते नहीं थे ।

शशीन—(गंभीर स्वर से)—सुशील, यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की देन है, जहां हमें स्वयं सर्वशक्तिवान् परमात्मा पढ़ाते हैं । मैं भी पहले बहुत चिंता करता था, लेकिन जबसे ब्रह्माकुमार बना हूं तबसे 'चिंता' यह शब्द मेरे जीवन रूपी शब्दकोष से ही निकल गया ।

सुशील—भैया, आपने तो चिंता से मुक्ति पाई, लेकिन ये तो सारा संसार ही चिंता के चिता पर जलभुन रहा है । देखो जैसे किसी को सुबह गाड़ी या बस पकड़ने की चिंता, किसी को अधिक-से-अधिक पैसा कमाने की, किसी को नौकरी के तलाश की, किसी को बच्चे को बड़ा आदमी बनाने की, किसी को बच्चों की शादी कराने की, किसी को समय से कार्यालय पहुंचने की, मतलब किसी-न-किसी चिंता से हर इंसान चिंता की चिता पर जल रहा है । क्या इन सभी चिंताओं से मुक्ति पाने का भी कोई उपाय है ?

शशीन—सुशील, चिंता की अग्नि में जलते हुए मन पर जब ज्ञानसागर परमात्मा शिव से ज्ञान-वर्षा होती है तो मन एकदम शीतल, शांत तथा दिव्य बन जाता है ।

सुशील—इसके लिए हमें क्या करना होगा ?

शशीन—प्रतिदिन परमात्मा शिव के मधुर बोल सुनना अर्थात् ज्ञान-स्नान करना होगा और सभी चिंताएं छोड़ एक चिंतामणि (शिवबाबा) को याद करना होगा । क्योंकि चिंतामणि शिव परमात्मा आये ही हैं सभी को चिंताओं से मुक्ति दिलाने । वह हरि ही हमारी सभी चिंताएं हर लेता है और हमें हल्का बनाता है । और वास्तव में इस संगमयुग में जो आत्माएं सदा रहती हैं हल्की, वो ही है लक्की । क्योंकि सदा हल्के रहनेवाले ही ऊपर परमधाम में रहनेवाले शिवपिता को याद कर सकते हैं ।

सुशील—लेकिन भैया, मुझे तो ये थोड़ा मुश्किल ही लगता है क्योंकि मैं एकदम नया उस चिंतामणि का सदा कैसे ध्यान कर सकूंगा ?

शशीन—ठीक प्रश्न पूछा सुशील आपने, सारा दिन चिंतामणि को कैसे याद करेंगे यह भी चिंता छोड़ो और कुछ समय स्वचिंतन में भी बिताओ ।

शशीन—सुशील, स्वचिंतन भी ऐसी सुंदर स्थिति है जिसमें हमें आनन्द की अनुभूति होती है । सबसे पहले हम स्वयं को देह से न्यारा, एक चेतन ज्योति बिंदु सितारा आत्मा अनुभव करें । फिर स्वयं के गुणों का अनुभव के साथ चिंतन करते रहें । जैसे मैं आत्मा शांत स्वरूप हूं... मुझ आत्मा से शांति की किरणें इस वायुमंडल में फैल रही हैं... मैं आत्मा पवित्र स्वरूप हूं... ऐसे-ऐसे हर गुण की गहराई में जाकर अनुभूति करने से स्वतः ही आनन्दमय स्थिति बनी रहेगी ।

सुशील—भैया, क्या इस अभ्यास से चिंताएं समाप्त हो जायेंगी ?

शशीन—हां, क्योंकि जब मन स्वचिंतन तथा प्रभुचिंतन में मगन रहता है तो सर्वशक्तिवान परमात्मा से सूक्ष्म शक्तियां प्राप्त करता रहता है जिससे मन शक्तिशाली बन जाता है । ऐसे शक्तिशाली मन पर चिंता वार करने का भी साहस नहीं कर पाती ।

सुशील—शशीन भैया, आपकी ये मधुर बातें सुनते-सुनते ही मुझे खुशी तथा आनन्द का अनुभव हो रहा है । और सचमुच जब मैं विशेष इन बातों का अभ्यास करूंगा तो निस्संदेह मुझे परमानंद की अनुभूति होगी । लेकिन सारे दिन में कामकाज करते हुए भी क्या यह अभ्यास सहज हो सकेगा ?

शशीन—जितना सहज हो सके उतना अभ्यास करते रहो । और मन को बिज़ी रखने के लिए परमात्मा के दिये हुए ज्ञान का मनन-चिंतन करने की टेव डालो ।

सुशील—अच्छा भैया, खाली मन में व्यर्थ संकल्प क्यों चलते रहते हैं ?

शशीन—सुशील, कहावत है—"**खाली मन शैतान का घर**" और शैतान कभी अच्छी बात नहीं सोचता, बुरा ही बुरा सोचता है । इसलिए चंचल मन को ज्ञान के मनन-चिंतन में व्यस्त रखने से आपको ज्ञानसागर से ज्ञान रत्नों की भर-भर के थालियां प्राप्त होती रहेंगी जिससे आप हजारों

(शेष पृष्ठ १८ पर)

भावना एवं कर्त्तव्य

□ले. डॉ. बलदेवराज., किशनपुरा

जब भी कभी हम किसी कार्य को करने लगते हैं तो उसके पीछे उस कार्य का प्रेरक या तो हमारी भावनाएं होती है या हमारे कर्तव्य होते हैं। हमारी भावनाएं हमारे मन की चाहना के अनुसार होती हैं तथा कर्तव्य हमारी मर्यादाओं,हमारे नैतिक मूल्यों, हमारे आदर्शों व हमारे ईश्वरीय ज्ञान की सीमाओं से घिरे होते हैं। कई बार कर्म करते हुए हम मन की आकांक्षाओं अथवा भावनाओं को मुख्य रखते हैं तो हमारी भावनाएं मान, शान, ईर्ष्या, द्वेष या स्वार्थ वश हुई होती हैं। इस प्रकार की कलुषित भावनाएं हमारे द्वारा नीच कार्य करवाती हैं तो जब उन कर्मों का कटु फल हमें चखना पड़ता है तो हमें खिन्नता होती है। निकृष्ट भावनाएं हमारी विवेक शक्ति को नष्ट कर हमसे बीच कार्य करवाती है जिससे हम अपने भविष्य को धूमिल,झंझट मय तथा अंधकार मय बना लेते हैं। तथा समाज की नज़रों से भी गिर जाते हैं। समाज से ठुकराए हम इतने बड़े विश्व में स्वयं को अकेला ही महसूस करते हैं। संगठन हमसे कोसों दूर भागता है।

इसके विपरीत यदि हम कर्म करते समय अपनी मर्यादाओं, नैतिक मूल्यों, आदर्शों व ज्ञान की सीमाओं का ध्यान रखकर अपनी विवेक शक्ति से अपने कर्तव्यों को निभाते हैं तो यही कार्य हमारे व्यक्तित्व का निखार करते हैं। तथा हम समाज में प्रतिष्ठा पाते हैं तथा हमारा भविष्य उन्नति की राह पर अग्रसर होता है। हमारी खुशी में दिन-ब-दिन वृद्धि होती है तथा विश्व के लिए हम आदर्श बन जाते हैं। समस्त विश्व की आत्माएं हमें अपनत्व की भावना से देखती हैं ऐसी हमारी कर्तव्य परायणता दूसरों के लिए भी मार्ग दर्शन का कारण बनती है। और न चाहते हुए भी हमें समाज द्वारा मान, प्रशंसा एवं स्नेह प्रदान कराती है। और हमारा मनोबल निरंतर बढ़ता जाता है।

भावनाएं बनावटी ज़िंदगी को ही बनाती हैं। तथा स्वयं को समाज के आगे अपनी योग्यता व सामर्थ्य से अधिक योग्य व सामर्थ्यवान सिद्ध करके स्वयं को दूसरों से अच्छा व समझदार साबित करने के लिए हमे कितने ढोंग रचने पड़ते हैं। तथा सदा यही भय बना रहता है कि कहीं वास्तविकता प्रकट न हो जाए। चेहरे के बनावटी भाव व शरीर की बनावटी चाल को ही अपने बनावटी जीवन की ढाल बनाना पड़ता है। ऐसा बनावटी जीवन मिथ्या अभिमान को ही बढ़ाता है तथा अपने अंदर खोखलेपन को ही पालता रहता है। जब भी कभी परिस्थिति वश या अन्य संयोगवश बनावट का पर्दाफ़ाश हो जाता है तो क्या हालत होती है उसका अंदाजा लगाना कोई मुश्किल नहीं, लेकिन कर्तव्य परायण व्यक्ति का जीवन निर्मल जल की तरह वास्तविकता लिए होता है। वह निश्चित व निर्भय होकर जीता है। उसे दूसरों के आगे किसी बात को छुपाने की आवश्यकता नहीं होती, न ही किसी बात को सिद्ध करने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता होती है। उसका जीवन सबके आगे प्रत्यक्ष होता है तथा दूसरों के लिए दर्पण का कार्य करता है। जिन्दगी में उसके हर कदम ठोस होते हैं तथा उन्नति देनेवाले होते हैं। ऐसा व्यक्ति सदा आगे-ही-आगे बढ़ता है, कभी पीछे नहीं हटता तथा उसके जीवन में गिरावट नहीं आती।

अत: जब भी कभी कार्य करते समय भावना एवं कर्तव्य में टकराव की स्थिति आ जाए तो हमें सदा दूषित भावनाओं को दमन करके कर्तव्यों का ही पक्ष लेना चाहिए। भ्रम, सन्देह अथवा पूर्वाग्रहों के वशीभूत किया गया कर्म हमें नीचा दिखाता है। इसलिए जिस विषय में आप पूरी तरह आश्वस्त न हों उस विषय पर अपनी ओर से विश्वास न करें। लालच, झूठी प्रशंसा पाने की चाह,स्वार्थ आदि मनोभाव हमारी भावनाओं को दूषित करते हैं। अत: हमें इनके प्रति सचेत रहना चाहिए कर्तव्य हमारे मनोबल को बढ़ाते हैं तथा हमें सचेत करते हैं।

जब भी कभी हम अपने कर्तव्यों या अपनी सीमाओं (मर्यादाओं) का उल्लंघन करते हैं तभी हमारे सामाजिक सम्बंधों में कटुता पैदा होती है। अत: समाज में अपने सम्बंधों को ठीक स्थापित रखने के लिए हमें चाहिए कि हम जीवन के प्रत्येक स्तर पर अपने कर्तव्य व अपनी सीमाएं जानें और उनका उल्लंघन कभी भी न करें। वास्तव में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारी अपनी समस्याओं की शुरुआत वहीं से होती है जहां हम अपनी मर्यादाओं व कर्तव्यों का उल्लंघन करते हैं। □

स्वर्णिम युग की चाह

ब्र० कु० 'संध्या', सागर

मानव की सबसे पहली इच्छा पूर्णता की है, वह हरेक चीज को संपूर्णता से युक्त देखना चाहता है। कभी अधूरापन नहीं देखना चाहता। हरेक धर्म, देश व सिद्धांत वाला मनुष्य सदा अपनी आशाओं को साकार में देखने का इंतजार करता है तथा उसके संपूर्णता की चाह विशेष तौर पर उसका संपूर्ण सुख शांतिमय जीवन तथा उस जीवन का कभी अंत न हो, उसकी यही चाहना होती है। यहां तक कि जब वह बाजार में भी कोई चीज खरीदने जाता है, तो सबसे पहले पूछता है कि यह चीज हम खरीद तो रहे हैं, परन्तु यह कब तक चलेगी, कितने दिनों की गारंटी है। और इसी प्रकार इस जीवन हेतू, शरीर हेतू उसका यही प्रश्न उठता है कि यह जीवन कब तक का है? कहीं यह शरीर छूट ना जाए। हालांकि यह पता है कि संसार नश्वर है, सब कुछ अस्थायी है। फिर भी उसमें ऐसी कौन-सी शक्ति है जो वह ऐसी अनहोनी बातों को साकार देखना चाहता है। हर मनुष्य की कल्पना ऊंची-ऊंची होती है, ऊंचा जाना चाहते हैं। कारण यह है कि चैतन्य शक्ति आत्मा ही जड़ शरीर को चलाती है जो अपने खोए हुए मूल स्वरूप पवित्रता, सुख, शांति को अर्जित करना चाहती है। सुख, शांति, पवित्रता सम्पन्न स्वर्णिम युग की प्राप्ति नहीं कर पाती। इसीलिए कहा जाता है "हम जैसा सोचते हैं वैसा नहीं हो पाता" उस चाहना के अनुकूल प्राप्ति न होने का कारण यह है कि हम आत्मा के वास्तविक स्वरूप में स्थित होकर या आत्माभिमानी बनकर वह कार्य नहीं करते।

आश्चर्य की बात तो यह है कि आत्मा को ऐसे स्वर्णिम युग की चाह क्यों है? बिना किसी चित्र या वस्तु को देखे सुने उसकी आशा या कामना नहीं की जा सकती। आत्मा को ऐसी सुखमय दुनिया की चाह है जो कि वर्तमान समय की परिस्थितियों में हरेक मनुष्य को असंभव व काल्पनिक बात लगती है। परंतु चाहना स्पष्ट करती है कि निश्चित ही कभी न कभी ऐसी स्वर्णिम दुनिया हुई होगी जिसमें एक धर्म, एक भाषा, एक राज्य व एक मत रहा होगा। देवी-देवताओं का राज्य होगा। कहा भी जाता है भारत सोने की चिड़िया थी। यहां घी दूध की नदियां बहती थीं, मानव-मन में प्रेम और पवित्रता थी, अपार वैभव और सुख समृद्धि थी, काया निरोगी व कंचन थी। परंतु आज मानव अपनी निकृष्टतम स्थिति पर आ गया है। धर्म, राजनीति, चरित्र, वैभव हर दृष्टिकोण से वह उद्योगी व पतित बन चुका है परंतु कल तक जो उसके पास था आज नहीं है। उस खोए स्वर्णिम समय की चाह स्वभावत: जाग उठती है। परन्तु स्वर्णिम काल के निर्माण हेतू मानव मन और विचार को स्वर्णिम और श्रेष्ठ बनाने और पवित्र कर्म करने की परमावश्यकता है। 'पवित्रता ही श्रेष्ठता है' पवित्रता से ही स्वर्ग धरा पर आएगा और कहा जाता है 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है' अतएव ऐसे स्वर्णिम युग की पुन: आवश्यकता जैसे-जैसे बढ़ी वैसे-वैसे आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग की सूक्ष्म शक्ति से उसका आविष्कार ईश्वरीय गुप्त कार्य के रूप में वर्तमान समय चल रहा है। यहां तक कि राजयोग के अभ्यास में विश्व की अनेक आत्माओं के मन और विचारों में पवित्रता की धारणा द्वारा अद्भुत परिवर्तन और दिव्य जागृति ला दी है। उनका जीवन, भविष्य तो क्या वर्तमान में ही स्वर्गिक सुख और आनन्दमय अनुभव हो रहा है। वह साधनों के अभाव में भी राजयोग द्वारा प्राप्त शक्ति, शांति, प्रेम, आनन्द से सदैव खुशहाल और संतुष्ट दिखाई देते हैं। राजयोग से विकारों, व्यसनों और दुष्प्रवृत्तियों पर सहज ही नियंत्रण पाकर तन और धन की सुरक्षा संभव है तथा स्वयं परिवर्तन से विश्व परिवर्तन या

स्वर्गिक दुनिया का निर्माण संभव है जिसका स्वरूप ईश्वरीय विश्वविद्यालय के भाई-बहिनों के धारणा में, पवित्र जीवन में स्पष्ट दृष्टिगत होता है।

आधुनिक युग की उन्नति का आधार विज्ञान है। इस विज्ञान ने शरीर को आराम देने के आधुनिक साधनों के निर्माण, में कोई कमी नहीं की। परन्तु यह साइंस मन या आत्मा को आराम देने वाले कोई स्थायी साधन या समाधान नहीं दे सकी। यही कारण है कि भौतिक सुखों व भोग वासना में लिप्त पाश्चात्य देशवासी मानसिक अशांति व तनावों के घेरे में फंसे हैं। वे वहाँ से निकल शांति की चाह में भारतीय आध्यात्म व ईश्वरीयता की ओर आकर्षित हो रहे हैं। वे अनुभव कर रहे हैं कि साइंस के गर्व से उत्पन्न राकेट व बम विश्व के अहित में हैं, विनाशकारी हैं। अतः स्वर्णिम युग की स्थापना साइंस द्वारा कतई नहीं हो सकती बल्कि साइलेंस पावर से ही स्वर्णिम दुनिया आएगी। साइलेंस द्वारा ही मनुष्य में असाधारण समस्याओं, परिस्थितियों, प्रकृति के प्रतिकूल वातावरण में भी विजयी बनने और एकरस रहने की सामर्थ्य आएगी। या दूसरे शब्दों में कहें अच्छे-बुरे, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक की परख शक्ति व हर परिस्थितियों को पार करने की सहनशक्ति आध्यात्मिक संवेदना या "स्प्रीचुअल सेन्स" (Spritual sense) और जीवन का सार अर्थात् "एसेंसआफ लाइफ" और दुर्जय, भयावह दृश्यों या परिस्थितियों में "पेशेंस" (Patience) (धैर्यता) इस "साइलेंस पावर' (Silence power) द्वारा आएगी। इस प्रकार इस पुरानी व जड़जड़ीभूत दुनिया का संपूर्ण परिवर्तन ही उसका नवीनीकरण और दिव्यीकरण (डिवनाइजेशन) (Divinisation) संभव है। परन्तु जिस प्रकार किसी इमारत की नींव यदि खोखली हो तो वह कभी भी गिर सकती है अतः नई नींव तैयार करने की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार विडंबना यह है कि आज मनुष्य की चाहना तो है कि रामराज्य व स्वर्णिम युग आए परन्तु पूर्ण रूप से वह देह अभिमानी व विकारी है उसका चरित्र व कर्म दूषित हैं। स्वयं व सर्व के लिए दुखदायी है तो ऐसी चरित्रहीन, रुग्ण, अशांतिपूर्ण, समस्याग्रस्त, धराशायी नींव के ऊपर बताइए स्वर्णिम दुनिया की श्रेष्ठ इमारत कैसे टिक सकती है? उसके लिए साइलेंस की पावर (शांति की शक्ति) चाहिए। यह शक्ति सचरित्रता तथा पवित्रता की धारणा से व आत्मा के मूल स्वरूप में स्थित होने से ही आ सकती है।

आज के विश्व में सिद्धांतहीन राजनीति, प्रेमहीन शिक्षा, मानवता शून्य विज्ञान, सदाचार विहीन व्यापार, धारणाहीन धर्म एवं साम्प्रदायिक समाज होने के कारण मानव वास्तविक सुख-चैन खो चुका है तथा वह सत्य पथ से हट गया है। अतः एकता, सुखशांति सम्पन्न स्वर्णिम युग की स्थापना हर मानव की चाह है। यही वर्तमान समय की मांग है। जिस युग में संसार के विभिन्न क्षेत्रों में सामंजस्य व एकरूपता होगी, संपूर्ण अहिंसा होगी, संपूर्ण सुख होगा, संपूर्ण शांति होगी अतः कहा जा सकता है संसार के हर क्षेत्र की सम्पन्नता व मानव जीवन में दिव्यता लाने का प्रयास ही स्वर्णिम युग की चाह है और इस स्वर्णिम युग या स्वर्ग लाने का आधार मानव मन की जितेन्द्रियता है। कहा जाता है जब इस धरा में स्वर्णिम युग या स्वर्ग था तो वहां का राजा इन्द्र अर्थात् इन्द्रियजीत कहलाता था। अर्थात् स्पष्ट है कि ज्ञान-योग की शक्ति से इन्द्रियों को शीतल व पावन बनाकर अपने अनुसार चलाना यही जितेन्द्रियता है, जैसा स्वर्ग के देवताओं की महिमा में वर्णित है। जितेन्द्रियता की शक्ति से ही मायाजीत प्रकृतिजीत एवं जगतजीत बना जा सकता है अतः हर मनुष्य को वर्तमान समय आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग द्वारा अपने जीवन को दिव्यगुणों से सम्पन्न बनाने की आवश्यकता है। दिव्यता के कारण स्वर्ग के वासी मानव देवी-देवता कहलाते थे। जिसके लिए देवताओं के हर अंग की तुलना कमल पुष्प से की जाती है। दिव्यता का शाब्दिक भाव निम्नानुसार लिया जा सकता है D=Dedication (समर्पणमयता), I=Interovertness (अन्तर्मुखता), V—Victorious (विजयी), I—Ideal (आदर्श), N—Nonviolence (अहिंसा), I—Intelligence

(शेष पृष्ठ ८ पर)

"रूहानी प्यार का महत्व"

ब्र० कु० 'सन्तोष', सतना

संसार में जितने भी प्राणी हैं उन सभी के अन्दर स्नेह अथवा प्यार की भावना स्वाभाविक रूप से होती है तथा वह इसी के अनुरूप व्यवहार की अपेक्षा दूसरों से भी करता है। इसी एक मुख्य भावना के आधार पर हमारे हर जगह से सम्बन्ध बनते हैं। अतः प्रत्येक मनुष्य के जीवन में प्यार की भावना का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है जिसकी कमी के कारण उनके व्यवहारिक जीवन में असंतुष्टता का प्रादुर्भाव होता है। वास्तव में देखा जाय तो प्यार एक ऐसी शुभभावना है जो हमें दूसरों से एकता स्थापित करने की प्रेरणा को सक्रिय बनाती है। प्यार भी मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है—

१. जिस्मानी प्यार

२. रूहानी प्यार। जहां पर जिस्मानी प्यार देह, देह के सम्बन्ध, एवं पदार्थों के प्रति आकर्षण का अनुभव कराता है वहां पर रूहानी प्यार रूह अथवा आत्मा के स्तर पर हमारे सम्बन्धों को सुदृढ़ करता है। शरीर विनाशी है अतः इस पर आधारित जिस्मानी प्यार भी विनाशी होता है जबकि आत्मा से प्यार अविनाशी होता है क्योंकि स्वयं आत्मा एक अजर, अमर व अविनाशी सत्ता है।

रूहानी प्यार एक जादू है

अगर गहराई से विचार किया जाय तो प्यार का सम्बन्ध वास्तव में होता ही "रूह" से है तभी तो आत्मा के निकल जाने पर कितना भी प्रिय व्यक्ति हो, उसके शरीर की कीमत कुछ नहीं रह जाती है। इस रूहानी प्यार के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है जिस्मानी आकर्षण। वास्तव में जिस्मानी प्यार इस रूहानी प्यार का एक विकृत रूप है जो कि स्वयं को देह समझने की भूल के कारण उत्पन्न होता है। इस रूहानी प्यार की झलक पाते ही आत्मा देहभान को भूलकर दिव्यता अथवा रूहानियत में स्थित हो जाती है। उसे अन्य आत्माओं के प्रति त्याग करने में, उनकी सेवा करने में एक आनंद का अनुभव होने लगता है। उसकी कामनाएं तथा वासनाएं शांत होने लगती हैं। सच्ची सन्तुष्टता का अनुभव होने लगता है। अतः रूहानी प्यार के आधार पर हमारे जीवन में दिव्य परिवर्तन आना प्रारम्भ हो जाता है। मानवीय सम्बन्धों में एक क्रान्ति आ जाती है। हमारे अन्दर की जो भी निषेधात्मक वृत्तियां हैं वह एक रचनात्मक दिशा में मुड़ने लगती हैं। अतः प्यार एक जादू का कार्य करता है जो हमें सहज ही महानता की ओर अग्रसर कर देता है।

रूहानी प्यार का मुख्य स्रोत

एक बार जब हम स्वयं को देह से न्यारी आत्मा निश्चय करते हैं तो सहज ही आत्मा के गुण व सम्बन्ध का अनुभव होना प्रारम्भ हो जाता है। आत्मा स्वयं प्रेमस्वरूप है तथा उसका मूल सम्बन्ध एक परमपिता परमात्मा से है। परमात्मा पिता प्रेम के सागर हैं अतः उनसे सम्बन्ध जोड़ने पर आत्मा स्वतः उनसे रूहानी प्यार का दिव्य अनुभव प्राप्त करती है। एक परमात्मा पिता से सम्बन्ध स्थापित हो जाने से आत्मा का अन्य सभी आत्माओं से रूहानी सम्बन्ध कायम हो जाता है। एक पिता की सन्तान होने से आत्मा रूप में हम सभी भाई-भाई हैं। यह रूहानी दृष्टि सम्पूर्ण विश्व को एक पारिवारिक स्नेह के सूत्र में बांध देती है। भाई-भाई की दृष्टि ही हमारे रूहानी स्नेह का मुख्य आधार बन जाता है।

जब विश्व के प्रति हमारी पारिवारिक भावना बन जाती है तब हमारे पास जो भी तन, मन, धन, समय अथवा शक्ति है उसका उपयोग हमारे दैहिक परिवार तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि वह विश्व की आत्माओं के कल्याण में प्रयोग होगा। यही हमारा परमात्मा के प्रति सच्चा समर्पण है।

जितना न्यारा उतना प्यारा

परमात्मा पिता ने हमें रूहानी प्यार का जो अनुभव कराया है वह हमें स्वतन्त्र तथा न्यारा बनाने वाला है। जैसे परमात्मा पिता सर्व का प्यारा होते हुए भी सर्व से न्यारा है। वैसे रूहानी प्यार का अनुभव तब होता है जब हम दैहिक सम्बन्धों से न्यारे बनते हैं। न्यारापन ही रूहानी प्यार का एक मापदण्ड है। न्यारापन न होने से प्यार के साथ कुछ कामनाएं या वासनाएं मिक्स हो जाती हैं जो हमारे प्यार को अशुद्ध अथवा विकृत बना देती हैं। सामान्यतः दुनिया में हमें प्यार का जो रूप देखने को मिलता है उसमें आसक्ति का एक मुख्य स्थान है। आसक्ति को ही प्यार समझने की भूल हम करते आए हैं। अब हमें परमात्मा पिता ने प्रीत की यह जो अनोखी रीति सिखाई है इसका आधार आसक्ति नहीं बल्कि अनासक्त भावना है। प्यार में जितना न्यारापन होगा उतना ही वह बेहद में फैलता जाएगा।

रूहानी प्यार जीवन की एक कला के रूप में

जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में इस रूहानी प्यार की भावना को महत्त्व दिया है उसके जीवन से सारी कम्पलेन्टस (शिकायतें) निकल जाती हैं। उसका जीवन सिर्फ स्वयं के लिए नहीं बल्कि वह दूसरों के कल्याण अर्थ अपने सम्पूर्ण जीवन को अर्पित कर देता है। त्याग, तपस्या, सेवा के पुरुषार्थ का भारीपन रूहानी प्यार के आधार से समाप्त हो जाता है। जिससे प्यार होता है उसके लिए त्याग करना, उसकी सेवा करना एक स्वाभाविक कर्म बन जाता है। यह त्याग उसे त्याग के रूप में अनुभव नहीं होता है बल्कि उसमें भी उसको एक अद्भुत प्राप्ति का अनुभव होता है। यही सूक्ष्म अनुभव हमें सन्तुष्ट बनाता है। रूहानी प्यार हमारे जीवन को सहज बना देता है। अनेक दिव्य गुण व शक्तियों का जीवन में विकास होने लगता है। विशेष रूप से नम्रता, निरहंकारिता, सहनशीलता आदि गुण जीवन में आ जाते हैं।

इस पुरुषोत्तम संगम युग में हमें परमात्मा शिव जब प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से ज्ञान व योग की शिक्षा देकर नया जीवन प्रदान करते हैं तब हमारी प्रीत उनसे जुट जाती है। संसार में तो विभिन्न सम्बन्धों के द्वारा भिन्न-भिन्न आत्माओं से प्रीत का अनुभव करते हैं, परन्तु परमात्मा ही हमारा एक ऐसा सम्बन्धी है जो अकेले ही हमें सर्व बन्धनों से मुक्त कर जन्म-जन्मान्तर पवित्रता, सुख-शांति की अखंड प्राप्ति कराने का आधार बन जाता है। परमात्मा से सर्व सम्बन्धों का रस अनुभव करने के लिए हमें प्रीत की जो रीत है वह भी निभानी पड़ेगी। परमात्मा से प्रीत तो प्रायः सभी की है, परन्तु उसकी रीति निभाने के आधार पर हम नम्बरवार प्रीत बुद्धि बन जाते हैं। इसी प्रीत बुद्धि के रूप में पांडवों का अथवा गोप-गोपियों का गायन है।

सार रूप में जीवन में रूहानी प्यार का अनुभव करने के लिए सर्व प्रथम हमें स्वयं के वास्तविक स्वरूप को पहचानना जरूरी है। एक बार जब हम अपने सत्य आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाते हैं तो आत्मिक सम्बन्ध के आधार पर रूहानी प्यार की भावना विकसित होने लगती है। इस रूहानी प्यार के साथ अगर हमारी अनासक्त वृत्ति निरंतर कायम रहती है तो यह प्यार हमारे जीवन को ऊंचा उठाने का आधार बन जाता है। इसीलिए रुहानी प्यार को एक शक्ति के रूप में भी स्वीकार किया जाता है। परमात्मा से हमारा जो प्यार है वही विकसित होकर सर्व-आत्माओं तक व्यापक बन जाता है। इसमें कोई अन्तर्विरोध नहीं है। अतः आइए इस स्वर्ण जयंती वर्ष में हम अपने जीवन के पुरुषार्थ का आधार रूहानी प्यार को बनाएं। तभी हम अपने लक्ष्य तक सहज ही पहुंचकर दूसरों को पहुंचा सकते हैं। □

रोपड़ में ब्र. कु. राजकुमारी राखी बांधने के पश्चात् भ्राता राजेन्द्र सिंह, मन्त्री पी. डब्ल्यू. डी. पंजाब को साहित्य व प्रसाद दे रही हैं।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता मोती लाल वोहरा को दुर्ग, भिलाई सेवा केन्द्र की ब्र. कु. उषा बहन राखी बांधते हुए।

खण्डवा : स्थित अनाथालय में ब्र. कु. सरिता अनाथ बच्चों को राखी बांधते हुए।

ताण्डूर : में ब्र. कु. जगदेवी विशेष डिप्टी कलैक्टर भ्राता वी. श्रीनिवास को राखी बांधते हुए।

(बाएं से) ब्र. कु. नारायणी भिवानी के डी. सी. भ्राता अजीत मोहन शरन तथा चरखी दादरी के डी. एस. पी. भ्राता रामभज वर्मा को राखी बांधते हुए।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

□ब्र.कु. लक्ष्मण एवम् ब्र.कु. सत्यनारायण, कृष्णानगर देहली., द्वारा संकलित

पटना—सेवाकेन्द्र की ओर से सम्बन्धित गीता पाठशाला नौबतपुरा ग्राम में गोल्डन जुबली के उपलक्ष्य में ''स्वर्णिम युग मेला'' का आयोजन किया गया। इस मेला का उद्घाटन आदरणीय निर्मल शांता दीदी जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गांव के सर्व प्रतिष्ठित व्यक्ति बी.डी.ओ., डॉक्टर्स, शिक्षकगण आदि-आदि उपस्थित थे। इस मेले को करीब पांच हजार आत्माओं ने देखा, लगभग सवा-सौ आत्माओं ने योग शिविर किया।

कलकत्ता—म्यूजियम की तरफ से ५० प्रदर्शिनियों का लक्ष्य लेकर मई, जून, जुलाई महीनों में भिन्न-भिन्न स्थानों पर अपने प्यारे बाबुल का संदेश देने के लिए अनेक मंदिरों व क्लब आदि में दो दिन (शनिवार, रविवार) की प्रदर्शनी १४ स्थानों पर की गयी जिससे हजारों आत्माओं को बाबा का संदेश प्राप्त हुआ। इनमें मुख्य रूप से विहाला के कई मंदिर व क्लब जैसे रामचन्द्र पल्ली (शिव मंदिर) नन्दन पल्ली (काली मंदिर), तरूण तीर्थ क्लब, प्रगति संघ क्लब आदि।

रांची—समाचार मिला है कि लॉयन्स क्लब की स्थानीय शाखा के एक विशेष समारोह में ब्रह्माकुमारी बहनों को आमंत्रित किया गया, बहनों के ''आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा समाज सेवा व उत्थान'' विषय पर प्रवचन हुए। समारोह की अध्यक्षता भूतपूर्व लॉयन्स गवर्नर भ्राता एस.आर. कार राय ने की व संचालन चीफ इंजीनियर भ्राता एन.एन. मंगला जी ने किया। इस कार्यक्रम द्वारा कई आत्मायें सम्पर्क में आयीं।

पोखरा—समाचार मिला है कि नेपाल आधिराज्य चुनाव में विजयी होनेवाले सदस्यों से सम्पर्क बढ़ाया गया ताकि भविष्य में उनके द्वारा अच्छी ईश्वरीय सेवा कराई जा सके। कास्की जिला से विजयी होनेवाले दो उम्मीदवार माननीय श्री सोमनाथ अधिकारी और माननीय श्री उत्तम पुन जी को ब्र.कु. बहनों ने जाकर विजयी होने का तिलक लगाकर मुख मीठा कराया और ब्र.कु. ईश्वरीय विश्वविद्यालय की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी करायी और परमपिता परमात्मा शिव बाबा का सत्य परिचय दिया। इस अवसर पर उनके साथ १५० आत्माओं ने भी प्रभु का परिचय पाया।

हाथरस—विश्वशांति वर्ष के अंतर्गत प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के तत्वाधान में नई धर्मशाला हाथरस के प्रांगण में कवि, पत्रकार, साहित्यकार एवं विधत मंडल मिलन सम्मेलन का आयाजन किया गया। इसमें विश्वविख्यात हास्य कवि पद्मश्री काका हाथरसी, वीरेन्द्र तरूण, कवयत्री कानन कौशल, गीतकार शकुंतला गर्ग युवा कवि हीरालाल सुमन, साहित्यकार कौशल किशोर वर्मन, पत्रकार वर्ग के रमेशचंद्र ''चन्द्रिल'' पत्रकार जयप्रकाश शर्मा 'तिरावरण' आदि ने भाग लिया। इस प्रोग्राम द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमपिता परमात्मा का संदेश मिला।

कटक—समाचार प्राप्त हुआ है कि विश्वशांति वर्ष के लिए ''शांति अभियान'' के कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया है। कटक से ढेंकानाल तक एक साइकिल यात्रा शुरू की गयी। इस साइकिल यात्रा के बीच अनेक कस्बों और गांवों में शांति का पैगाम दिया गया। ढेंकनाल में ही प्रेस कांफ्रेंस भी रखी गयी जिसमें कई स्थानीय पत्रकार पधारे थे। शाम को ढेंकनाल टाउनहाल में ''शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया।'' तथा प्रदर्शनी लगाई गई।

पानीपत—सेवाकेन्द्र की ओर से तीन दिन के लिए विशेष योग शिविर का प्रोग्राम रखा था जिसमें डॉ., वकील, लैक्चरार, बैंक ऑफिसर, राजनेता तथा कुछ व्यापारीगण आदि ने भाग लिया। इन्हीं दिनों रोटरी क्लब में भी आध्यात्मिक प्रोग्राम रखा गया इन सभी प्रोग्रामों में दिल्ली साउथ एक्सटेंशन की शांति बहन ने भाग लिया। इन प्रोग्रामों से काफी आत्माओं को लाभ मिला है।

भरतपुर—समाचार मिला है कि भरतपुर सेवाकेन्द्र का मकान बदली किया गया है इसी शुभ अवसर पर एक सेमीनार का आयोजन किया गया तथा ज्ञान प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। नये मकान का उद्घाटन आगरा क्षेत्र की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. विमला जी ने किया। और झंडारोहण भ्राता आर.पी. पारीक अतिरिक्त जिलाधीश भरतपुर ने किया। इस शुभ अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे थे।

तेजपुर—स्वर्ण जयंति के उपलक्ष्य में शहर के मुख्य-मुख्य स्थानों से एक शोभा यात्रा निकाली गयी। शोभा यात्रा का

उद्घाटन वहां के समाजसेवी सुप्रसिद्ध व्यापारी भ्राता अग्रवाल जी ने फ्लैग ऑफ करके किया। साथ ही शाम को वहां के प्रसिद्ध हाल कामरूपिया नामघर में एक विशाल कन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन तेजपुर के डिप्टी कमिश्नर भ्राता प्रफुल्ल शर्मा जी ने किया, मुख्य अतिथि के रूप में वहां के ए.डी.सी. भ्राता विश्वकर्मा जी तथा अन्य प्रतिष्ठित महानुभावगण पधारे थे। इस प्रोग्राम द्वारा अनेक आत्माओं को प्रभु का संदेश मिला।

झज्जर—समाचार मिला है कि ज्ञान के कोर्स का साप्ताहिक सप्ताह मनाया गया। इसके अलावा राजकीय कॉलेज के अध्यापकगण व हाईस्कूल के अध्यापकों का एक स्नेहमिलन रखा गया। सभी लोगों को ईश्वरीय संदेश दिया गया।

जगाधरी—समाचार मिला है कि रक्षा-बंधन के शुभ पर्व पर सिटी मजिस्ट्रेट एम.एल. बंसल जी, मजिस्ट्रेट गणेश जी को, डॉ. शर्मा जी, डॉ. बृजमोहन जी आदि अनेक मुख्य व्यक्तियों को राखी बांधकर स्मृति का तिलक लगाया गया। इसके अलावा शहर के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बांधी गयी।

नवसारी—समाचार मिला है कि अव्यक्त बापदादा के इस वर्ष के इशारे अनुसार विशेष तपस्या में दृढ़ता सम्पन्न तपस्या और सफलता के लिए विशेष एक दिन की ज्ञान योग भट्ठी का आयोजन किया गया था। भट्ठी तपस्या के दिन आत्मप्रकाश भाई (मधुवन वाले) वहां पहुंचे। उन्होंने योग की यथार्थ विधि क्या है और इसकी सिद्धि कैसे प्राप्त कर सकें—इस विषय पर बहुत ही अच्छे अनुभव युक्त विचार रखे। सभी भाइयों के प्रश्नों के उत्तर स्वत: हल होते गये। इस अवसर पर पत्रकारों का स्नेहमिलन रखा गया इस तरह उनकी भी सेवा हो गयी।

मजलिस पार्क (दिल्ली)समाचार मिला है कि पंद्रह अगस्त को सेवाकेन्द्र के हॉल में रक्षा-बंधन का कार्यक्रम विशेष क्षेत्रीय विशिष्ट व्यक्तियों के लिए आयोजित किया गया जिसमें पैंतीस क्षेत्रीय वी.आई.पीज. ने ब्र.कु. बहनों से शांति की राखी बंधवाई। इस कार्यक्रम में 'आदर्श व्यापार मंडल के प्रधान, सचिव व आजादपुर मंडी के मुख्य व्यक्तियों ने विशेष रूप से लाभ उठाया।' इस अलौकिक कार्यक्रम में जज भ्राता आर.एल. गुप्ता तथा सीनियर एडवोकेट भ्राता लालचंद वत्स ने अपने अनुभव युक्त प्रवचनों से ईश्वरीय ज्ञान की ओर आत्माओं को उन्मुख व प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त चेयरमैन वर्क्स कमेटी भ्राता मंगतराम सिंघल महानगर पार्षद भ्राता महेंद्र सिंह तथा अनेक गांवों के प्रधानों को भी राखी बांधी गयी।

बीकानेर—विश्वशांति वर्ष के उपलक्ष्य में स्थानीय कारागृह में शांति शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के लिए कारागृह के पुलिस अधीक्षक भ्राता यादव जी ने काफी सहयोग दिया। कारागृह में लगभग २५०.बंदी जन एवं वरिष्ट अधिकारियों ने लाभ उठाया। इसके अलावा अणुव्रत समिति (जैन समाज) एवं शहर जिला कांग्रेस (ई) की ओर से राष्ट्रीय एकता सप्ताह के कार्यक्रम में "सर्वधर्म सद्भावना सम्मेलन" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी कमल बहन ने आपसी सद्भावना के लिए सभी को प्रेरित किया तथा सभी को आध्यात्म दर्शन की तरफ आकर्षित करते हुए कहा कि आपसी आत्मिक भाव, भाईचारे की दृष्टि एवं राजयोग के द्वारा धर्म के वास्तविक स्वरूप को धारण करने से भारत में एकता अखंडता ला सकते हैं।

बड़ौदा—सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि बड़ौदा के दैनिक पत्र "लोकसत्ता में" 'हरि का मार्ग शूरवीर का' "श्रद्धा और अर्धश्रद्धा" इत्यादि लेख छपे इसके अलावा अन्य पत्रिकाओं में छपें। इसके अलावा हरीश भाई के 'गुजरात समाज' दैनिक पत्र में "मानव का पूर्वज बन्दर नहीं पर देव है" के अनुसंधान में तीन लेख प्रसिद्ध हुए। इस तरह कई प्रकाशनों द्वारा ईश्वरीय सेवा होती रहती है।

गोधरा—सेवाकेन्द्र द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में ईश्वरीय सेवा का प्रोग्राम बनाया गया। विरणीया, बड़ागाम, बगीडोल, भागैया, ककोर और टीबा गांव में मानव एकता आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसमें ५००० ग्राम्यजनों ने लाभ लिया। गोधरा शहर के विभिन्न विस्तारों में प्रोजेक्टर शो से २००० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया। मृत्यु प्रसंग पर आयोजित शांति शिविर में शांति का संदेश भी दिया गया। सेवाकेन्द्र पर वी.आई.पी. व्यक्तियों के लिए राजयोग शिविर का आयोजन किया गया।

पूना—समाचार मिला है कि राखी के पावन पर्व पर मेटोडा जेल में ५० कैदियों के सामने रक्षा-बंधन के महत्त्व को समझाया गया तथा उनको पावनता की राखी बांधी गयी। शाम को रक्षा-बंधन का विशेष महत्त्व जनता के सामने रखा गया। उस विशेष समारोह में पूना कारपोरेशन के मेयर भ्राता उल्लास ढोले पाटिल ने भाग लिया। प्रोग्राम के चेयरमैन भ्राता लक्ष्मण सिंह रावत जी को भी राखी बांधी गयी। इस तरह अनेक मुख्य व्यक्तियों को राखी बांधी गयी।

राजनन्द गांव—रक्षा-बंधन के अवसर पर यहां १५० कैदियों को राखी बांधी गई तथा अनेक वी.आई.पीज. को राखी बांधी गयी । भ्राता बलवीर सिंह विधायक को भी ईश्वरीय राखी बांधकर 'पवित्र बनो... योगी बनो' का संदेश दिया गया ।

दिल्ली (कृष्णा नगर)—सेवाकेन्द्र की ओर से राखी के पावन पर्व पर दिल्ली पूर्वी क्षेत्र के विशिष्ठ व्यक्तियों को राखी बांधी गयी । जिसमें डी.सी.पी. पूर्वी दिल्ली जोन भ्राता राजा गोपाल जी, ए.सी.पी. पूर्वी दिल्ली जोन, ए.सी.पी. भ्राता जगदीश सिंह गांधी नगर, तथा बी.डी.ओ. और उनके स्टाफ को, इसके अलावा गांधी नगर थाने के कुछ कैदियों व अन्य आफिसरों को भी राखी बांधकर ईश्वरीय संदेश दिया गया ।

अमृतसर—राखी के पावन पर्व के शुभ अवसर पर सेवाकेन्द्र पर प्रातः ८ बजे से १० बजे तक तथा सायं ५ बजे से ७ बजे तक अलौकिक कार्यक्रम रखा गया । काफी संख्या में लोग राखी का पैगाम सुनने व राखी बंधवाने के लिए आश्रम पर पधारें । ब्रिगेडियर जे.सी. नेकरे, करणसिंह गिल प्रिंसिपल डेन्टल कॉलेज, आदि कई प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे । इसके अलावा बहनें कुछ-कुछ वी.आई.पीज. को स्वयं राखी बांधने गयीं—भ्राता गोपीचंद भाटिया प्रेजीडैंट—दुरगियाना प्रबन्धक कमेटी, डॉ. बलदेव प्रकाश, वाईस प्रेजीडैंट भारतीय जनता पार्टी, बृजभूषण मेहरा एम.एल.ए. (कांग्रेस आई) भ्राता सुदेश अरोरा, एस.पी. हेडक्वार्टर, इत्यादि सज्जनों को राखी बांधकर आत्म-स्मृति का टीका लगाया ।

चण्डीगढ़—रक्षा-बंधन का पावन पर्व स्थानीय राजयोग भवन में बहुत ही उमंग उल्लास से मनाया गया । ब्र.कु. बहनों ने नगर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बांधी और उन्हें नव विश्व-निर्माण के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनने की प्रेरणा दी । जिनमें पंजाब तथा हरियाणा के उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता आर.एन. मित्तल, भ्राता तारा सिंह स्पीकर, हरि. विधान सभा, भ्राता कटार सिंह वित्तमंत्री हरि, भ्राता एना.डी.-दीक्षित स्टेशन डॉयरेक्टर आल इंडिया रेडियो, भ्राता वी.एन. नारायण, सम्पादक ट्रीब्यून, भ्राता आर.एस. शर्मा सम्पादक दैनिक ट्रीब्यून, आदि मुख्य व्यक्तियों को राखी बांधी गयी ।

भावनगर—सेवाकेन्द्र द्वारा रक्षा-बंधन के पर्व उमंग-उत्साह के साथ मनाया गया । विद्यालय की ओर से १२ ग्रुप शहर के विभिन्न क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों को राखी बांधने गये । इसके अलावा धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक संस्थाओं तथा अनेक संघों के लोगों को राखी बांधी गयी । शांति संग्रह पत्र भी सभी लोगों से भरवाये गये । कई अधिकारी गण ने सेवाकेन्द्र पर पधार कर राखी बंधवाई । और विश्वशांति के लिए योगदान दिया ।

भुवनेश्वर—समाचार मिला है कि राखी का पावन पर्व हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया । अनेक मंत्रियों संसद सदस्यों, आफिसर इत्यादि को पावन राखी बांधी गयी। सर्वप्रथम उड़ीसा राज्य के राज्यपाल भ्राता बी.एन. पाण्डेय तथा बहन शांता पाण्डेय को राखी बांधी गयी । इसके पश्चात् मुख्यमंत्री जे.बी. पटनायक जी व उनकी पत्नी जयंति पटनायक एम.पी. तथा अन्य मंत्रीगण व अन्य संसद सदस्य गण को राखी बांधी गई और आत्म-स्मृति का तिलक लगाया गया ।

कोटा—रक्षा-बंधन के अवसर पर कोटा सेवाकेन्द्र की ओर से शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बांधी एवं ईश्वरीय संदेश दिया । रक्षा-बंधन के दिन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी जी के कोटा प्रवास के अवसर पर उन्हें और उनके साथ में आये सहकारिता राज्यमंत्री श्रीराम किशन वर्मा, एवं राहत एवं कल्याणमंत्री श्री गुलाब सिंह जी को भी राखी बांधी । इसके अलावा कैदियों को भी राखी बांधी गई ।

मुरादाबाद—रक्षा-बंधन के पावन पर्व पर कुछ ईश्वरीय सेवाएं इस प्रकार की गई । ''भारत एकता-शांति समिति'' द्वारा आयोजित समारोह में ब्र.कु. बहनों को बुलाया गया । इसमें सिटी मजिस्ट्रेट भ्राता राजकमल गुप्ता, शहर के अन्य उच्च अधिकारीगण उपस्थित थे । सभी को शिव बाबा का परिचय सुनाया गया । इसके अलावा १५ अगस्त को एम.पी. हाफिज सदीक अपने साथियों सहित आश्रम पर पधारे । उनको भी राखी बांधी गयी । बहन पुष्पा सिंघल (एम.एल.ए.) के घर जाकर उनको राखी बांधी गयी । इसके अलावा जेलर साहब, कमिश्नर भ्राता गंगाधर शुक्ल, सिटी मजिस्ट्रेट राजकमल गुप्ता व डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बांधी गयी ।

अम्बाला कैंट—रक्षा-बंधन का कार्यक्रम रोटरी क्लब में विश्वशांति अभियान हेतु किया गया । इस प्रोग्राम में मुख्य अतिथि डी.आई.जी., एस.के. सेठी जी थे । एम.एल.ए. भ्राता रामयास धमीजा जी भी थे । इनके अलावा अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे थे । सभी लोगों को राखी का पावन संदेश दिया गया । इसके अलावा क्रोधादि बुराइयों को त्याग करने के लिए कहा गया । □□

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, सम्पादक, ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओमशांति प्रैस, कृष्णानगर, देहली-५१ से छपवाया । Regd No. 10563/65-D, (E)—70